सजग सरस युवा पत्रिका
जनवरी 2022 ₹ 40.00

मुक्ता

मिस यूनिवर्स हरनाज कौर संधू

टीन पार्टी स्पैशल

जवां पार्टी में कदम न लड़खड़ाएं

सब की नजर में नंबर वन दिखें

बचाए रेप के खतरों से प्रैजेंस औफ माइंड

स्टाइल औफ द मंथ

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Piramal

TETMOSOL®

टेटमोसॉल रोज़ लगाना, मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

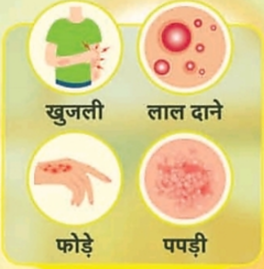
खुजली
लाल दाने
फोड़े
पपड़ी

से राहत दे

TETMOSOL®
DUSTING POWDER
Skin Infection Expert
ANTI-FUNGAL
TRIPLE SKIN BENEFITS
Fights Skin Infections
Controls Itching
Fights Prickly Heat
100 g

नया डस्टिंग पाउडर भी उपलब्ध

Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
Prescribed by Doctors*
TETMOSOL DUSTING POWDER

डॉक्टर का सुझाया **No.1** ब्रैंड#

नींबू जैसी ताज़ी महक

नया टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर त्वचा के इन्फेक्शन, घमोरियां और खुजली से राहत देता है।

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल साबुन खुजली (स्केबीज़) के कणो के कारण होने वाले संक्रमण के लिए है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह ले। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT May 2020 में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें। रचनात्मक प्रदर्शन।

CMAC - TP/20210308-04

मुक्ता

जनवरी 2022 अंक : 1004

लेख

टीनऐजर्स पार्टी : मस्ती और धमाल 4
स्पैशल टीनऐजर्स पार्टी थीम 6
हनी...प्रैग्नैंसी शादी के बाद 14
सब की नजर में नंबर वन दिखें 18
जवां पार्टी : कदम लड़खड़ा न जाएं 20
कैट और विक्की की रौयल वैडिंग 26
बचाए रेप के खतरों से प्रैजेंस औफ माइंड 40
मिस यूनिवर्स हरनाज कौर संधू 42

बातचीत

अभिनेता डा. आशीष गोखले 34

कथा साहित्य

अज्ञातवास 10
अब कोई नाता नहीं 22

स्तंभ

मुक्त विचार 9
प्रेम समस्याएं 30

फीचर

Style of the month 28
वैब सीरीज रिव्यू : क्या देखें 32
बौलीवुड buzz 36
Small screen 46

कविता

आओ मेरे पास प्रिये 8
बेबसी 8

दिल्ली प्रैस
सामाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल:
editor@delhipress.biz

8527666772

निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz
ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845 ● ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जी.डी. अंबेडकर मार्ग, वडाला-400021. फोन : 022-24122661 ● 11, फर्स्ट फ्लोर, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, बैंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076 ● 14, पहली मंजिल, सीसंस कौंप्लैक्स, मांटीअथ रोड, चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448 ● 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596 ● जी-7 पायोनियर टावर्स, 1 मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537. ● 16 ए, अमृत बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा कोलकाता-700026. ● 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, पटना-800001. फोन : 0612-2323840 ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. फोन : 05222618856 ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, जयपुर-302006. ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुटा रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264.
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 40.00. एक/दो वर्ष : ₹522/996. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.47 (डाक व्यय अतिरिक्त)

	International Subscription Price Air mail Charges	Express Delivery Europe & South America	Express Delivery SAARC Countries	Express Delivery Rest of Countries
1 year	50	210	120	140
2 year	95	420	240	275

(All the Prices given are in US$)

टीनऐज पार्टियां मौजमस्ती और धमाल

आजकल टीनऐज पार्टियां चलन में हैं, जहां टीनऐज लड़केलड़कियां खूब मौजमस्ती करते हैं. ये पार्टियां एक तरह से उन का स्ट्रैस दूर करने में मदद करती हैं.

लेख • शैलेंद्र सिंह

लखनऊ के मशहूर लाउंज का हौल युवा लड़केलड़कियों से खचाखच भरा था. लकी ने 'हिप्पी शे' की थीम पर टीनऐज के लिए पार्टी का आयोजन किया था. पार्टी का समय दोपहर 3 बजे से शाम 8 बजे तक था. समय से पहले युवाओं की भीड़ लग चुकी थी. सभी ने हिप्पी स्टाइल के फैशनेबल कपड़े पहन रखे थे. भीड़ को कंट्रोल करने के लिए सिक्योरिटी गार्ड का इंतजाम भी पहले से किया गया था.

लड़कियों के लिए इस पार्टी में एंट्री फ्री थी. हौल को डिस्कोथेक का रूप दिया गया था. जोरदार म्यूजिक व डांस चल रहा था. हौल में 150 से अधिक टीनऐज जमा थे. समय से शुरू हुई पार्टी समय पर ही खत्म हो गई. ऐसे में सभी समय से अपने घर भी पहुंच गए. टीनऐज के लिए ऐसी थीम पार्टियों का आयोजन अब हर छोटेबड़े शहर में होने लगा है.

लखनऊ में ऐसी टीनऐज पार्टियों का आयोजन करने वाली लकी कहती हैं, ''युवाओं से जुड़ी इस तरह की पार्टियों की थीम उन की रुचियों के हिसाब से रखी जाती है. इस का युवाओं के बीच प्रचारप्रसार किया जाता है. पार्टी में हिस्सा लेने के लिए एंट्री फीस देनी पड़ती है. इस में हिस्सा लेने वाले युवाओं के लिए यह जरूरी होता है कि वे पहले से तय ड्रैस कोड में ही तैयार हो कर आएं. टीनऐज पार्टियों का चलन बढ़ता जा रहा है. अब ज्यादा संख्या में टीनऐज ऐसी पार्टियों में हिस्सा लेने लगे हैं.

लकी

सोशल मीडिया पर होता है प्रचारप्रसार

ऐसी पार्टियों का प्रचारप्रसार करने के लिए फेसबुक, व्हाट्सऐप और इंस्टाग्राम का सब से अधिक सहारा लिया जाता है. इस के अलावा शहर की प्रमुख जगहों पर होर्डिंग लगाई जाती हैं. युवाओं को यह पता होता है कि किस इवैंट और्गेनाइजर की पार्टी अच्छी होती है. वे उसी की पार्टी में शिरकत करना पसंद करते हैं.

इवैंट ऑर्गेनाइजर की कमाई का मुख्य आधार एंट्री फीस होती है. कुछ पार्टियों में लड़कियों की एंट्री फ्री रखी जाती है. कपल एंट्री की फीस अधिक होती है. अकेले लड़के को एंट्री अधिकतर नहीं दी जाती है. एंट्री देते समय इस बात का पूरा खयाल रखा जाता है कि पार्टी में कोई गड़बड़ न हो. लड़कों से ऐसी गड़बड़ियों की अपेक्षा ज्यादा रहती है. इस वजह से उन को एंट्री नहीं दी जाती है.

आज एक ही शहर में तमाम ऐसे इवैंट ऑर्गेनाइज्ड होने लगे हैं. यह उन की कमाई का प्रमुख जरिया हो गया है. लकी कहती है, ''मैं शहर में अपनी पहचान बनाना चाहती हूं. मेरी पार्टियों की थीम ऐसी होती है कि लोगों को पंसद आती है. हम अकेली लड़कियों के लिए भी थीम पार्टी का आयोजन करते हैं.

''हम ने लड़कियों के लिए हाईहील पार्टी का आयोजन किया था. इसे लोगों ने खूब पसंद किया. इस के अलावा जंगल पार्टी, बौम्बे रैट्रो जैसी पार्टियां भी खूब पंसद की गईं. आने वाले दिनों में भी हम ऐसी ही पार्टियों का आयोजन करने की योजना बना रहे हैं. इन का चलन तेजी से बढ़ रहा है. बच्चे अब अपने पेरेंट्स से परमिशन ले कर ऐसी पार्टियों में हिस्सा लेने आते हैं. पेरेंट्स यह चाहते हैं कि बच्चे समय पर घर पहुंच जाएं, देर न करें. इसलिए पार्टी का समय दोपहर में रखा जाता है.''

टीवी शो से बढ़ा चलन

थीम पार्टियों का चलन बड़े लोगों में पहले से था. टीवी पर दिखाए जाने वाले युवाओं के शोज में ऐसी थीम पार्टियों को दिखाया जाता है. इस के बाद बड़े शहरों में टीनएेज पार्टियों का चलन बढ़ा. अब छोटेबड़े हर शहर में ऐसी पार्टियों का चलन बढ़ गया है. युवा ऐसी पार्टियों में शामिल हो कर अपने फोटो, ड्रैस, फेसबुक और व्हाट्सऐप पर एकदूसरे के बीच शेयर करना चाहते हैं.

फैशन डिजाइनर शिप्रा कहती हैं, ''युवा अब अपने फैशन के हिसाब से समाज में दिखाना चाहते हैं. ऐसे में उन के लिए ऐसी पार्टियों में हिस्सा लेना जरूरी हो जाता है. कई बार टीनएेजर पार्टी के हिसाब से अपनी ड्रैस तैयार कराते हैं. पार्टी ऑर्गेनाइजर ऐसी थीम रखते हैं जिस में फैशन और इमोशन दोनों का समावेश हो. साथ ही साथ, इस में हिस्सा ले कर युवा मौजमस्ती व धमाल कर सकें.''

शिप्रा

कई युवाओं के लिए ऐसी पार्टियों में हिस्सा लेना स्टेटस सिंबल भी बन चुका है. कुछ युवा इस को ले कर बहुत क्रेजी होते हैं. वे हमेशा ऐसी पार्टियों की जानकारी रखते हैं. हर पार्टी में हिस्सा लेना चाहते हैं. इस पार्टी में डीजे और म्यूजिक बैंड का प्रयोग भी किया जाता है. कई बार हुनरमंद युवा खुद ही गाने गाते हैं. ऐसे में ये पर्टियां इन के अंदर छिपी प्रतिभा को निखारने का काम भी करती हैं.

12वीं कक्षा में पढ़ने वाले हर्ष कहते हैं, ''मैं पार्टियों के नाम से घबराता था. कभी बहुत सारे लोगों के बीच अपनी बात खुल कर नहीं कह पाता था. मुझे मेरा एक दोस्त ऐसी ही पार्टी में ले कर गया. मुझे वहां जा कर बहुत अच्छा लगा. मेरे अंदर जो हीनभावना रही वह निकल गई. इस का मुझे बहुत लाभ हुआ. मैं अब कालेज की हर ऐक्टिविटी में हिस्सा लेने लगा. अब मुझे लगता है कि ऐसी पार्टियों के बहुत लाभ होते हैं.''

नशे और दबंगई से दूर रहें

टीनएेज पार्टियों में मौजमस्ती और धमाल मचाने के चक्कर में युवा कई बार नशा कर के घर पहुंच जाते हैं. यह पार्टी आर्गेनाइजर के लिए अच्छी नहीं होती है. एक बार छवि खराब हो जाए तो अगली पार्टी में लोग नहीं जाते हैं. लोग अपने घरों की लड़कियों को ऐसी पार्टियों में नहीं भेजते जिन पार्टियों में नशे की बातें सामने आती हैं. वहां पुलिस और प्रशासन का डर भी बना रहता है. ऐसी पार्टियों में हिस्सा लेने वालों को इस तरह की बुराई से खुद ही दूर रहना चाहिए. आयोजक भी पार्टियों में ऐसे लोगों को एंट्री नहीं देते हैं. अगर कोई जोरजबरदस्ती करता है तो वे उसे बाहर धकेल देते हैं.

ऐसी पार्टियों में हिस्सा लेने वाली आयुषी कहती हैं, ''टीनएेज पार्टियों को हमें केवल मौजमस्ती के रूप में लेना चाहिए. इस के बहुत सारे लाभ होते हैं. हमें बहुत सारे लोगों को एकसाथ समझने का मौका मिलता है. बहुत सारे लोगों के गुणअवगुण देखने का मौका मिलता है. हमें खुल कर मस्ती करने का मौका मिलता है. एक तरह से हम पढ़ाई और कैरियर के बोझ से कुछ देर के लिए अपने को दूर कर लेते हैं.''

आयुषी

ऐसी पार्टियों की थीम चाहे जो हो पर मुख्य बात डांस और म्यूजिक होता है. बड़े शहरों में युवाओं के लिए डिस्कोथेक खुले होते हैं. जिन शहरों में यह सुविधा नहीं है वहां के युवाओं के लिए ऐसी पार्टियां डिस्कोथेक का विकल्प भी होती हैं. कुछ लड़कियों का मानना है कि पेड पार्टियां अच्छी होती हैं. पेड पार्टियों में वे पार्टियां अच्छी होती हैं जिन में सभी को पैसा दे कर एंट्री दी जाती है. उन का कहना है कि ऐसी पार्टियों में अच्छे किस्म के टीनएेज आते हैं. जिन पार्टियों में कपल एंट्री फ्री होती है वहां कुछ गलत संगत वाले युवा भी आ जाते हैं. कुछ बिगड़ैल किस्म के युवा परेशानी का सबब बन सकते हैं. ●

लेख ● रोहित

टीनऐज पार्टियों का चलन बढ़ रहा है तो जरूरी है कि पार्टी थीम ऐसी चुनी जाए जो टीनऐजर्स को खुश कर दे. आइए जानते हैं इंटरैस्टिंग पार्टी थीम.

स्पैशल टीनऐज पार्टी थीम

यूरोप, अमेरिका की तर्ज पर भारत में भी टीनऐज पार्टियों का चलन चल पड़ा है. बच्चे जैसे ही 14 साल की उम्र पार करते हैं उन्हें थोड़ीबहुत प्राइवेसी और आजादी की जरूरत महसूस होने लगती है. जाहिर है, इस उम्र से ही बच्चों में फिजिकली और मैंटली चेंजेस आने लगते हैं.

यह सच है, टीनऐज पार्टियां अगर सही इरादे व एहतियात के साथ की जाएं तो इस से कई फायदे टीनेजर्स को मिलते हैं. उन की मैंटल ग्रोथ, क्रिएटिविटी, सोशल गैदरिंग, यूनिटी के लिए इस तरह की पार्टियां कारगर होती हैं. ये फ्रैंडशिप की फीलिंग ग्रो करती हैं.

अच्छी बात यह कि भारत में आज इस बात को बच्चों के मातापिता भी समझने लगे हैं, इसलिए वे भी उन की फीलिंग्स की कद्र करते हुए उन्हें थोड़ीबहुत प्राइवेसी देने को तैयार हो चुके हैं. इस कारण बहुत बार तो पैरेंट्स ही टीनऐज पार्टियां अरेंज कर लेते हैं, ताकि बच्चों की देखरेख भी हो जाए और बच्चों की फीलिंग्स भी निकल कर सामने आ जाए.

पर सब से पहला सवाल टीनऐज पार्टियों को करने में यह खड़ा होता है कि किस थीम पर ये पार्टियां की जाएं? बहुत बार टीनऐज पार्टी हम करना तो चाहते हैं पर पता ही नहीं रहता कि पार्टी में करना क्या है, कैसे इसे इंट्रैस्टिंग बनाना है और पार्टी को स्पैशल बनाने के लिए

क्याक्या एक्टिविटीज की जा सकती हैं? तो चलिए, हम आप को बताते हैं कि इस के लिए आप कौन सी थीम ले सकते हैं.

आउटडोर मूवी नाइट : जरूरी नहीं कि पार्टी है तो पार्टी के नाम पर बहुत ज्यादा तामझाम किया जाए. ऐसा कोई टीनऐजर नहीं जिसे मूवी देखना पसंद नहीं. मूवी सभी को पसंद आती है. टीनेजर्स के लिए फिल्में एक जौनर हैं. उन्हें सुपर हीरो या एनिमेटेड मूवीज पसंद होती हैं. इसलिए फ्रैंड्स के साथ मूवी देखना अच्छी टीनऐज पार्टी हो सकती है. इस के लिए–

प्रोजैक्टर और स्क्रीन : आप घर के अंदर या यदि मौसम साफ है तो बाहर लौन में एक अच्छा प्रोजैक्टर लगा सकते हैं. यदि आप स्क्रीन पर पैसा खर्च नहीं करना चाहते हैं तो बस, एक सफेद शीट लगा सकते हैं.

TACO BAR
Extra 7 lines

मूवी फूड : मूवी के बीच मुंह चलाना किसे नहीं पसंद. आप मूवी देखते समय टौपिंग या पौपकौर्न सर्व करें.

रोशनी : लालटेन, सोलर स्टेक लाइट या स्ट्रिंग लाइट मूड में इजाफा करेंगी. लाइट में क्रिएटिविटी कर सकते हैं.

और्डिनरी पिज्जा काफी नहीं : क्या किसी ने पिज्जा कहा? यह पूरी दुनिया में पार्टी फूड माना जाता है. इसे ज्यादातर टीनऐजर पसंद करते हैं. लेकिन क्यों न अपने स्वाद में पिज्जा के साथ कुछ हट कर परोस कर पार्टी को दिलचस्प बनाया जाए.

विभिन्न प्रकार के पिज्जा पेश करें : आजकल पिज्जा कई तरह के उपलब्ध हैं. बीबीक्यू चिकन से ले कर एक्स्ट्रा चीज और टैको पिज्जा तक, पिज्जा की बहुत सारी किस्में हैं. थोड़ा मजा लें, पिज्जा बनाना मुश्किल नहीं, पार्टी को किफायती रखने के लिए खुद पिज्जा बना सकते हैं और ज्यादा बढ़िया रहेगा अगर अपने क्लोज फ्रैंड्स को बनाने के लिए इनवाइट किया जाए.

कल्चरल फ्लेवर : पार्टी में खाने की कुछ चीजें ऐसी बना सकते हैं जो खास ट्रैडिशन से जुड़ी हों. ऐसी जिन्हें कुछ विशेष जगह बनाया व खाया जाता हो. ये पार्टी में जान डाल देंगी और यूनिकनैस पैदा करेंगी.

गेमिंग पार्टी : गेमिंग पार्टी की जा सकती है. ऐसे गेम हों जिन में सभी इन्वौल्व हो सकें. आप को गेमिंग थीम वाली पार्टी करने में बहुत मजा आ सकता है.

गेमिंग स्टाइल डैकोरेशन : इस थीम के लिए गेमिंग स्टाइल डैकोरेशन किया जा सकता है. जैसे अगर किसी का बर्थडे है तो केक किसी गेम कैरेक्टर पर बनाया जा सकता है या सभी को गेमिंग ड्रैस पहनने को कहा जा सकता है. इसी प्रकार सजावट भी गेम के आधार पर की जा सकती है.

अपनी रंगथीम चुनें : किसी भी पार्टी के में रंगथीम चुनने से पार्टी का स्वर सैट करने में मदद मिलती है. इस का खासा प्रभाव पड़ता है.

इंटरैस्टिंग गेम : गेमिंग पार्टी के लिए पहले से प्लानिंग बनाने की जरूरत है कि किस तरह के गेम खेले जाएंगे. इस के लिए जरूरी है कि सभी का इन्वौल्वमैंट हो, वरना मजा किरकिरा हो जाएगा.

बैकयार्ड सी बीच पार्टी : सी बीच के पास जरूरी नहीं कि हर कोई रहता हो, लेकिन अगर आप नहीं भी रहते हैं तो इस का मतलब यह नहीं है कि सी बीच आप के पास नहीं आ सकता. टीनऐज पार्टी के लिए सी बीच थीम पार्टी मजेदार होगी. यह टीनेजरों को जरूर पसंद आएगी. इस के लिए आप अपने खाली लौन का इस्तेमाल कर सकते हैं.

थीम वाला खाना परोसें : इस पार्टी में मौकटेल से ले कर थीम वाले केक और स्वादिष्ठ फ्लिपफ्लौप सैंडविच परोसे जा सकते हैं. क्रिएटिव बन कर ऐसा भोजन तैयार किया जा सकता है जो आप को सी बीच की फीलिंग दे रहा हो.

सी बीच के माहौल को बनाएं : छतरियों, कुरसियों, लौंगबोर्ड, सर्फबोर्ड या समुद्रतट की गेंदों सहित सजावट में सी बीच जैसा माहौल बनाएं.

मौज, मस्ती और खेल : एक अच्छी पार्टी व एक बेहतरीन पार्टी के बीच का अंतर मनोरंजन है. हम सभी जानते हैं कि टीनऐज मस्ती करना पसंद करते हैं. सी बीच से रिलेटेड कुछ गेम्स शुरू करें या कोंगा या लिम्बो गेम शुरू करें और खासकर, बीच म्यूजिक बजाना न भूलें.

मर्डर मिस्ट्री पार्टी : यह एक पार्टी है जो टीनऐजर और उन के सभी दोस्तों के लिए यादगार रहेगी. मर्डर मिस्ट्री पार्टी में किशोरों को सुराग ढूंढ़ना होता है क्योंकि वे पार्टी में होने वाले एक इमेजिनरी मर्डर को सुलझाने के लिए मिल कर काम करते हैं.

आउटडोर बर्थडे बैश : बैकयार्ड बर्थडे बैश होने की खास बात यह है कि आप इसे जितना चाहें उतना फैंसी या आकस्मिक बना सकते हैं. इस में आप अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते हैं. यह क्रिएटिव होता है. आप चाहे 13 या 19 वर्ष के हों, आप घर के पीछे या आगे लौन में इसे मना सकते हैं. ●

आओ मेरे पास प्रिये

तोड़ सभी पाखंडों को अब आओ मेरे पास प्रिये,
मेरे नीरस जीवन के तुम मदमाते मधुमास प्रिये.

तुम्हें रूढ़ियों ने जकड़ा है, बुरी तरह भरमाया है,
सड़ीगली जो त्यक्त मान्यता उन का जादू छाया है,
छोड़ो देखो नई रोशनी मन में भर उल्लास प्रिये.

खुली हवा में सांसें लो, अब घुटघुट मरना छोड़ो,
जो तुम को पीछे ले जाए उन से नाता तोड़ो,
सदियों तुम ने दुख भोगे हैं, झेला है संत्रास प्रिये.

अंधकार ही आया हिस्से में, तुम ने हंस कर स्वीकारा,
समय मान कर सदा संवारा, लंपट निपट नकारा,
तुम्हें पुकारे बड़े प्यार से देखो खिला उदास प्रिये,
तोड़ सभी पाखंड़ों को, अब आओ मेरे पास प्रिये.

– श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल' ●

बेबसी

स्मृतियों के सागर में
भावनाओं की है गहराई,
तैरता मन नाव सा
याद जबां पर आई.

सीपों से पल में
सृजन के सींचे मोती,
आलिंगन में लेते भींच
जब पास तुम्हारे होती.

जाने कैसा यह मंजर
जाने कैसी यह दूरी,
बेबस हैं हमतुम
बस एक ही मजबूरी.

– पल्लवी सिंह ●

मुक्ता में नए अंकुर

के अंतर्गत हम नवोदित कवियों को मौका दे रहे हैं
कि वे कुछ नए उद्‌गार, नई शैली की कविताएं लिख कर हमें भेजें.
कविताओं में कुछ नयापन हो जो युवाओं की सोच को दर्शाए.

संपादक को कविता भेजने का पताः
दिल्ली प्रेस
ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग नई दिल्ली-110055
या
editor@delhipress.biz पर ईमेल करें.
आप हमें 8527666772 पर
व्हाट्सऐप या मैसेज भी कर सकते हैं.

मुक्त विचार

संपादकीय

आंदोलन की ओर अब बेरोजगार

किसानों के बाद सारे देश में अब बेरोजगारों के धरनेप्रदर्शन शुरू हो गए हैं. पढ़ाई तो कर ली, डिग्री भी मिल गई, लड़कालड़की भी बगल में हैं लेकिन नौकरी कहां, काम कहां, कुछ करने के लिए कहां?

सरकार ने जिस तरह नोटबंटी, जीएसटी और धड़ाधड़ टैक्स थोपे हैं उन से निजी क्षेत्र की नौकरियां खत्म हो गईं और सरकारी सैक्टर में भारी कंपीटिशन शुरू हो गया है. सरकारी सैक्टर में अब कौन्ट्रैक्ट सिस्टम चालू हो गया है और ज्यादातर सरकारी काम ऐसे कौन्ट्रैक्टरों को मिलते हैं जिन्हें 2–3 साल में बदला जा सके. नतीजा, उन के पास काम करने वालों की भी जिंदगी आधीअधूरी ही है.

MODIJI WE
Want Jobs
NOT
Communal Mobs.
AIS

ओला, स्विगी, जोमैटो, एमेजौन ने नौकरियां दी हैं पर या तो पैकिंग की या डिलीवरी बौय की. काम में जरा भी चूक, जरा सा ढीलापन तो फौरन काम से बाहर. जिंदगी में कोई ठहराव नहीं. हर समय डर कि अब क्या?

शहरी युवाओं के लिए और मुसीबत है क्योंकि मोबाइलों ने उन के सपने ज्यादा ऊंचे कर दिए हैं. हजारों चीजों के एड सामने दिखते हैं. मोबाइल खोलें तो सुंदर व स्मार्ट बनने के हजार तरीके हाजिर हो जाते हैं. मोबाइल खोलो तो सुंदर लड़कों व लड़कियों की कतारें दिख जाएंगी. पर वास्तविकता में कहां, जब जेब खाली हो और मांबाप पर नोटों के लिए डिपैंडैंट हों. सरकार, जो अगला जन्म सुधारने पर रातदिन काम कर रही है, मंदिर ठीक करा रही है, तीर्थों के रास्ते ठीक करा रही है, बड़ी गाड़ियों को दौड़ाने के लिए हाईवे बनवा रही है. वह नौकरियां देने के लिए कुछ नहीं कर रही.

बेरोजगारों को अब उसी तरह के आंदोलन करने होंगे जैसे किसानों ने किए. किसानों का कल सुधारने के नाम पर बनाए गए कानूनों से किसानों को वैसे ही खत्म कर दिया जाएगा जैसे मंदिर का नाम ले कर युवाओं को भगवा दुपट्टा दे कर बेरोजगारी के खिलाफ बोलने के लायक भी नहीं रखा गया.

बेरोजगारों के आज नेता भी नहीं हैं क्योंकि यूनिवर्सिटियों की यूनियनों पर भगवा गैंगों ने कब्जा कर लिया है. वे चाहे खुद बेरोजगारी की मार सह रहे हों लेकिन बेरोजगारों के लिए आंदोलन भी वे अपनी पैरंट बौडी की इजाजत के बिना नहीं खड़ा कर सकते. पौलिटिकल पार्टियां तो वैसे ही निकम्मी हैं. उन के नेताओं को राज करना आता है, जनता का हित समझ नहीं आता.

अब तो यही है कि जहां 10–20 जमा हो सकें, कुछ हल्ला करें, क्लास के बाहर करें, यूनिवर्सिटी के दफ्तर पर करें, किसी डीएम के दफ्तर या घर में, एमएलए, एसपी के दफ्तर पर करें. छोटेछोटे पर लगातार, बारबार. अपनी बात नहीं कहें तो कह दें कि उन का कल ड्रग्स और बीमारियों में ही बेकार हो जाएगा.

……

लड़कियों की शादी का अधिकार

आजकल भगवा सरकारें बहुत से कानून बना रही हैं जिन की हैडिंग में प्रोटैक्शन शब्द होता है. होने को तो लगता है कि वह कानून किसी को बचाने के लिए होगा पर होता है टैक्स, सरकारी अफसर, सरकारी मनमानी, हिंदू धर्म में कट्टरपंथी सोच वगैरह को ले कर आम आदमी को कठघरे में खड़ा करने के लिए. अब अगर जरूरत है तो वह है प्रोटैक्शन औफ गर्ल्स राइट टू मैरिज एक्ट की. हर लड़की को हक होना चाहिए कि वह कब, किस व कैसे लड़के से शादी करे और उस लड़की के मातापिता, भाई, बहन, जीजा या पड़ोसियों को यह हक न हो कि वे कहें कि लड़की को बहकाया जा रहा है, वह नादान है, वह बेवकूफ है आदि.

अभी दिल्ली में एक बालिग लड़की ने घर से भाग कर एक लड़के से शादी कर ली और उस के साथ अलग घर में रह रही थी. 4–5 दिनों बाद उक्त लड़की के घर वालों ने उस लड़के को अगवा कर उसे बुरी तरह मारा व लड़की को अपने कब्जे में ले लिया. पुलिस वालों ने हमेशा की तरह लड़की के घरवालों का साथ दिया क्योंकि ज्यादातर पुलिस कौंस्टेबल और अफसर ऐसी जमातों से हैं जहां लड़की को दो कौड़ी की माना जाता है और उसे पैदा होते ही माता, पिता, भाई के हुक्म को मानने की आदत डाल दी जाती है. पुलिस वाले तो लड़कियों के जीवनसाथी चुनने के हक को हक मानते ही नहीं हैं. वे तो उस पौराणिक सोच में विश्वास करते हैं जिस में लड़कियां पिता, पति या बेटों की जिंदगीभर गुलाम बनी रहती हैं.

हर लड़की को अपना जीवनसाथी चुनने का वैसे तो संवैधानिक हक अनुच्छेद 21 में पहले से है क्योंकि अपनी मरजी से जीना ही राइट औफ लाइफ है पर इसे साफतौर से एक्सप्लेन करने के लिए जरूरी है कि प्रोटैक्शन औफ गर्ल्स राइट टू मैरिज एक्ट बने और उस में हर उस जने को अपराधी बताया जाए जो शादी रोके, चाहे मां हो या बाप. इस एक्ट में पुलिस के लिए डायरैक्शन भी होना चाहिए कि वह जान ले कि रीतिरिवाज, जाति, भाषा, नागरिकता, धर्म से ऊपर एक लड़की का अपना जीवनसाथी चुनने का हक है. साथ ही, राज्य का यह काम हो कि वह इस हक को हर उस लड़की को दे, जो मांगे.

उस कानून में पंडित, मौलवी, पादरी, मजिस्ट्रेट को यह डायरैक्शन हो कि वे शादी में अड़ंगा न लगाएं. उन का काम सिर्फ यह देखना हो कि लड़की कहीं जोरजबरदस्ती के चलते तो शादी नहीं कर रही है. इस के अलावा उन्हें किसी तरह की कोई आपत्ति करने की इजाजत न हो. ●

अज्ञातवास

कहानी • एस भाग्यम शर्मा

मरने के पहले अर्चना किसी को यह कहानी सुनाना चाहती थी. नीरा को सुना कर वह हलका महसूस करने लगी. इधर नीरा वर्षों बाद अपनी सहेली के मिलने की खुशी मनाए या रोए, उस की समझ में नहीं आ रहा था...

सोशल मीडिया की यदि बहुत सी बुराइयां हम गिना सकते हैं तो फायदे भी इस के कम नहीं. राधा ने मुझे जब फेसबुक पर फ्रैंड रिक्वैस्ट भेजी तो मैं ने उसे एक्सैप्ट कर लिया. वह मेरे पीहर के शहर की थी तो अपनेआप अपनत्व आ जाना स्वाभाविक है. कहते हैं न, पीहर का कुत्ता भी प्यारा होता है. इस उम्र में भी पीहर का मोह नहीं छूटता.

राधा सरकारी अफसर से रिटायर हुई है. उस में पढ़नेलिखने की बहुत रुचि थी. मैं भी थोड़ीबहुत पत्रपत्रिकाओं में लिख लेती हूं. चांस की बात है, उसे मेरी कहानियां पसंद आईं. वह मेरी फैन हो गई. मैं ने कहा, ''तुम मुंबई कैसे पहुंच गईं.'' ''रिटायरमैंट के बाद बेटा मुंबई में नौकरी करता है तो मैं उस के साथ ही रहती हूं.'' फिर इधरउधर की गप हम अकसर करने लगे. ''तुम लोग भी ग्वालियर में रहे हो न,'' मैं ने पूछा.

''हां, थाटीपुर में रहे हैं.''

''हम भी वहीं रहते थे. फिर तो तुम अर्चना को जानती होगी.''

''अर्चना को तो मैं जानती हूं क्योंकि वह हमारे पड़ोस में ही रहती थी पर वह मेरे से सीनियर थी, सो बात नहीं होती थी.''

''अर्चना मेरी खास सहेली थी. हम साथसाथ पढ़ते थे. तुम्हारे पास उस का नंबर है?''

''नहीं, उस से मेरा कौन्टैक्ट नहीं है. परंतु उन के रिश्तेदार से मेरा कौन्टैक्ट है. आप कहें तो मैं उस से नंबर ले कर दे दूं.''

अर्चना से मिले 60 साल हो गए थे. शादी के बाद कभी नहीं मिली. उस के बारे में भी मुझे कोई खबर नहीं थी. उस के नंबर देते ही मैं ने अर्चना से कौन्टैक्ट किया.

''मैं नीरा बोल रही हूं.''

''कौन सी नीरा?''

''यार अर्चना, हम नागपुर और ग्वालियर में साथसाथ पढ़े हैं. याद आया, हम ने 1960 में 10वीं का एग्जाम भी साथसाथ दिया.''

''अरे नीरा, तुम... इतने साल बाद, 60 साल हो गए तुम से मिले. आज फोन किया? मेरा फोन नंबर कहां से मिला? मुझे तो बहुत आश्चर्य हो रहा है. आज यह क्या सरप्राइज है. तुम ऐसे कैसे प्रकट हो गईं?''

''मेरी तो छोड़, अर्चना तुम्हें खोजने की मैं ने बहुत कोशिश की पर तुम कहीं नहीं मिलीं. तुम तो जैसे अंर्तधान हो गईं. तुम अभी कहां हो?''

''मेरी छोड़ो नीरा, अपनी बताओ? कहां व कैसी हो? बच्चे सैटल हो गए?''

''मेरा तो सब ठीक है. 77 साल की उम्र है. इस उम्र में जैसे होते हैं, वैसी ही हूं. मैं तो राजस्थान में हूं. तुम अपनी कहानी सुनाओ? तुम्हारे बारे में जानने के लिए मैं बहुत उत्सुक हूं. तुम कहां गायब हो गईं?''

''मेरी कहानी सुन कर नीरा तुम बहुत दुखी होगी. क्या सुनाऊं, अपनी गलती बताऊं, दूसरों का धोखा बताऊं, समय का खेल कहूं?

तुम तो जानती हो कि बचपन में ही मेरे मांबाप गुजर गए थे पर मैं हमेशा खुश रहती थी. हमेशा हंसती रहती थी. नीरा, अभी भी मैं हमेशा हंसती रहती हूं.''

''मैं तो अर्चना तुम्हें जानती हूं. तुम तो बड़ीबड़ी बातों को भी हंस कर टाल देती थीं. ठहाके मार कर हंसना तो कोई तुम से ही सीखे. इस के बावजूद तुम्हारे साथ क्या हुआ जो तुम अज्ञातवास में चली गईं? मैं ने तुम्हारे बारे में जानने की बहुत कोशिश की, पर सब व्यर्थ गया.''

''तुम्हें मेरा नंबर कैसे मिला?''

''यह कमाल सोशल मीडिया का है. पहले तो राधा ने तुम्हारे रिश्तेदार से नंबर मांगा तो उन्होंने नहीं दिया, फिर पता नहीं क्या सोच कर दे दिया. खैर, तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ.''

''सुनाती हूं बाबा, मैं ने आज तक अपनी कहानी किसी को नहीं सुनाई पर तुम्हें जरूर सुनाऊंगी. मुझे भी अपना मन हलका करना है. इस समय नहीं. रात को 8 बजे डिनर के बाद. तुम तो फ्री होगी न उस समय?''

''मैं तो हमेशा फ्री हूं. मैं तो अकेली रहती हूं. इसीलिए तुझे कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है. बिना किसी झिझक के तुम अपनी कहानी और सच्ची कहानी सुना देना क्योंकि 60 साल मैं ने बहुत सब्र किया पर तुम्हारे बारे में कुछ भी पता न चला. आज रात सो नहीं पाए तो कोई बात नहीं. आज तो तुम्हारी कहानी सुननी ही है. मैं बड़ी उत्सुकता से रात के 8 बजे का इंतजार करूंगी. बाय, बाय.''

रात को जल्दी से खाना खा कर मैं अर्चना के फोन का इंतजार कर रही थी. क्या बात हुई होगी? अर्चना ने मन बदल लिया होगा क्या? बड़े पसोपेश में मन जाने कहांकहां भटक गया. एक बार को मुझे लगा कि मुझे उस से उस की कहानी नहीं पूछनी थी. शायद मुझ से बात नहीं करेगी. देखा, तो घड़ी में 9 बज गए. मैं कुछ निराश हो गई. तभी फोन की घंटी बजी. अर्चना का ही फोन था.

''हैलो अर्चना.''

''हैलो नीरा, मैं ने तुम्हें बहुत इंतजार करवाया. मुझे गलत मत समझना. मेरी एक सहेली है यहां पर. उस को कोई परेशानी थी. वह मुझे ही सबकुछ मानती है. सो मैं उस से बात करने लगी और उस की समस्या का समाधान भी कर दिया.''

''अरे वाह, अर्चना तुम तो दूसरों की समस्या का समाधान भी कर रही हो. बहुत अच्छी बात है.''

''नीरा, मैं कभी दूसरों के भरोसे थी. अब मैं दूसरों की मदद करती हूं. जब हम सक्षम हैं तो दूसरों की मदद करनी ही चाहिए. तू तो शुक्र मना नीरा, तू इस हालत में मुझ से मिल रही है. वरना पहले मिलती तो मेरा बहुत बुरा हाल था.''

''अर्चना, अब यह बात रहने दे मुझे तो अपनी इस अचानक गायब होने की कहानी सुना. अभी तुम कहां हो?''

''मैं तो अनाथाश्रम में हूं.''

मैं चौंक गई, ''क्या बक रही है अर्चना? ऐसा क्या हुआ? कैसे हुआ?''

''मैं सही कह रही हूं नीरा? शायद मेरे जीवन में यही लिखा था.''

''क्या कह रही है तू? तेरा भाई तो बहुत बड़ा अफसर था.''

''हां, वे तो मुझे अच्छी तरह रखते थे? मुझ से ही गलती हुई जिस का दंड मैं ने भुगता.''

''क्या पहेलियां बुझा रही है? साफसाफ बता, क्या हुआ? तेरी शादी हो गई थी क्या?''

''मेरा एक बेटा है जिस की शादी हो गई. अब वह विदेश में है. उस का एक बेटा और बेटी है. अर्थात मेरे पोतेपोती भी हैं. मैं दादी भी बन गई. मेरी बहू बड़ी समझदार है. बेटा भी बहुत अच्छा है.''

''सबकुछ ठीक है, फिर तुम यहां अनाथाश्रम में क्यों?''

''तुझे तो पता था नीरा, मेरे मम्मीपापा बचपन में ही मर गए थे जब मैं तीसरी में पढ़ती थी. यह तो तुम्हारे सामने की बात है. पहले मम्मी गईं, एक साल बाद पापा चले गए. बड़े भैया के साथ ही मैं रही. ग्वालियर से जब तुम लोग भोपाल चले गए, उसी समय भैया का ट्रांसफर हो गया और हम इंदौर आ गए.''

''यह तो मुझे पता था, उस के बाद तुम लोग भोपाल आ गए, यह तो मैं ने सुना था. पर हम आपस में मिल नहीं पाए. मेरा भोपाल आना बहुत कम हो गया था.''

''भैया ने मुझ से कह दिया, मैं तुम्हें 10वीं के बाद आगे नहीं पढ़ा सकता क्योंकि मेरी अपनी भी 2 लड़कियां हैं. मुझे उन की भी शादी करनी है. तुम्हें ज्यादा पढ़ाऊंगा तो उस लायक लड़का भी देखना पड़ेगा? मैं तुम्हारी शादी कर देता हूं. लड़का देखने की प्रक्रिया शुरू हो गई. हमारी जाति में दहेज की मांग बहुत ज्यादा होती है, तुझे पता है. इस के अलावा कभी लड़का मुझे पसंद नहीं आता, कभी लड़के को मैं पसंद नहीं आती. न कुछ बैठना था, न बैठा. मैं 35 साल की हो गई.''

''इस बीच अर्चना, तुम ने कुछ नहीं किया, बैठी रहीं?''

''नहीं नीरा, मैं कैसे बैठी रहती. पहले सिलाई वगैरह सीखी. उस के बाद म्यूजिक सीखने लगी. बीए तो मैं ने म्यूजिक से कर लिया पर आगे कुछ करने के लिए मुझे ग्रेजुएट होना जरूरी था. भाभी से मैं ने कहा. उन्होंने कहा, प्राइवेट भर दो. इंटर किया, फिर बीए भी कर लिया? एमए करने के लिए यूनिवर्सिटी जौइन की. गाने के साथ एमए भी करने लगी.''

‘‘यह तो बहुत अच्छी बात है अर्चना. तू ने तो अच्छा काम किया.’’

‘‘यहीं से तो मेरी बरबादी के दिन शुरू हो गए. मैं ने सबकुछ खो दिया.’’

‘‘क्या कह रही है अर्चना?’’

‘‘सही कह रही हूं. अभी तक तो सब सही चल रहा था, पता नहीं कैसे एक सज्जन मुझ से टकरा गए और उन का व्यक्तित्व इतना आकर्षित था कि मैं उन की ओर आकर्षित हो गई.’’

‘‘अर्चना, यह तो कोई बुरी बात नहीं है.’’

‘‘सही कह रही हो नीरा. पहले मुझे भी ऐसा ही लगा था. इस में क्या बुराई है. वैसे भी तुम्हें पता है, मैं जातिधर्म, छुआछूत इन सब से बचपन से ही दूर रहती थी पर हमारा समाज तो ऐसा नहीं है. उस ने कहा, मंदिर में शादी कर लेते हैं. मैं ने अज्ञानता में उसे स्वीकार कर लिया और अपने को भी पूरी तरह से समर्पित कर दिया. उस ने भी कहा, मैं कुछ नहीं मानता हूं, मानवता ही सबकुछ है. पर मुझे बरबाद करने के बाद वह कहता है, मांबाप से पूछना पड़ेगा. बोल, मैं ने कहा, पहले क्यों नहीं पूछा? लेकिन पूछूंगापूछूंगा कहता रहा. मेरे पेट में गर्भ ठहर गया. 'अभी भैयाभाभी से मत कहना. पहले मैं अपने मांबाप से कह देता हूं, फिर तुम कहना.' लेकिन अब तो मेरे लिए रुकने का सवाल ही नहीं. भैयाभाभी से कहना पड़ा.’’

‘‘फिर?’’

‘‘लड़का तो उन्हें भी पसंद था पर उस की बातें बड़ी अनोखी थीं. बारबार बेवकूफ बना रहा था. अब रुकने का तो सवाल ही नहीं था. भैया ने कहा, लड़के पर कार्यवाही करते हैं, जिस के लिए मैं राजी नहीं हुई. जिस को मैं ने एक बार चाहा उस के लिए ऐसी बात कैसे सोच सकती हूं?’’

‘‘अर्चना, यह क्या मूर्खता हुई? अबौर्शन करवा लेतीं.’’

‘‘भैयाभाभी ने भी इसी की सलाह दी थी. अर्चना, तू बता इन सब के चक्कर में मैं 38 साल की हो गई. अबौर्शन करवाना भी रिस्की था. इस के अलावा मुझे बच्चा चाहिए था. उस के जैसे आकर्षित व्यक्तित्व, सर्वगुण संपन्न और बुद्धिमान लड़का ही मुझे चाहिए था. जो मुझे सिर्फ एक बार मिला. सोचा, यही मेरी जिंदगी है. इस से लड़का या लड़की जो होगा, वैसा ही होगा, वही मुझे चाहिए था. कब मेरी शादी होती? कब बच्चा होता? इन सब बातों ने मुझे व्यथित कर दिया था. जो एक बार मुझे मिल गया, उसे मैं खोना नहीं चाहती थी. औरत अपने को तब तक संपूर्ण नहीं मानती जब तक वह मां नहीं बन जाती. तू कुछ भी कह नीरा, यह बात मेरे अंदर बहुत गहराई से बैठ गई थी. इस के लिए मैं कोई भी रिस्क उठाने को तैयार थी. सब तकलीफ बरदाश्त कर सकती थी. मैं तुझे बेवकूफ, मूर्ख, पागल या पिछड़ी हुई लग सकती हूं पर मैं बच्चा चाहती थी. मैं ने भैया से साफसाफ कह दिया. मुझे बच्चा चाहिए.’’

‘‘फिर?’’

‘‘भैया ने कहा, 'यदि तू यही चाहती है तो समाज वाले तुझे स्वीकार नहीं करेंगे? यही नहीं, मुझे भी अपनी लड़कियों की शादी करनी है. फिर मेरी लड़कियों की शादी कैसे होगी? यदि तू बच्चा ही चाहती है तो इस के लिए तुझे बहुत सैक्रिफाइस करना पड़ेगा. क्या तू इस के लिए राजी है?' मैं ने कहा, मैं इस के लिए तैयार हूं.’’

‘‘क्या भैया ने तुझे घर से निकल जाने को कहा?’’

‘‘नहीं, उन्होंने कहा जहां तुझे कोई नहीं जानता हो ऐसी जगह तुझे जाना पड़ेगा और किसी भी पहचान के लोगों से संबंध नहीं रखना होगा? क्या इस के लिए तू तैयार है? मैं बच्चे के लिए यह शर्त मानने को तैयार हो गई.’’

‘‘यार अर्चना, तू तो पागल हो गई थी.’’

‘‘अब नीरा, तू कुछ भी कह सकती है. पर मुझे जो समझ में आया, मैं ने वही किया. अब मैं कल तुम्हें बाकी बातें बताऊंगी क्योंकि मेरी एक सहेली आ गई है, उस को कुछ जरूरी काम है. बाय, बाय.’’

‘‘बाय, बाय अर्चना, कल 8 बजे इंतजार करूंगी?’’

‘‘बिलकुल, बिलकुल.’’

कह तो दिया मैं ने, पर दूसरे दिन रात के 8 बजे तक बड़े अजीबअजीब खयाल मेरे दिमाग में आए. क्या अच्छे घर की लड़की थी और आज एक अनाथाश्रम में रह रही है? वक्त कब, किस के साथ, कैसा खेल खेल जाए, कुछ पता नहीं चलता. मन उमड़घुमड़ कर अर्चना के आसपास ही घूम रहा था. सारा दिन मेरा मन किसी काम में नहीं लगा.

बारबार घड़ी की तरफ देखने लगती. अरे, यह क्या, अर्चना के फोन की घंटी है. मैं ने देखा, क्या 8 बज गए, नहीं अभी तो 7 ही बज रहे थे. मैं ने उठाते ही बोला, ‘‘व्हाट्स अ ग्रेट सरप्राइस, अभी तो 7 ही बजे हैं अर्चना.’’

‘‘तुझे काम है नीरा तो मैं बाद में करती हूं.’’

‘‘अरे नहीं रे, मैं तो तेरे फोन का इंतजार कर रही थी पर तुम ने कहा था 8 बजे, इसीलिए अभी तो 7 ही बज रहे हैं. मैं तो फ्री हूं तुम्हारी कथा सुनने के लिए. कल क्या बात हो गई थी? तुम क्यों चली गईं?’’

‘‘ऐसा है मेरे साथ इसी आश्रम में एक युवा लड़की रहती है. उस के साथ मेरी अच्छी दोस्ती हो गई. वह मुझे बड़ी दीदी कहती है. वह अपनी सारी समस्याएं मुझे बताती है. कई बार मुझ से सलाह की भी अपेक्षा करती है. जब छोटी बहन बन ही गई तो उसे समझाना और उस को उचित सलाह देना मेरा कर्तव्य तो है न.’’

‘‘बिलकुल, क्या हो गया था?’’

‘‘ऐसा है उस का नाम प्रिया है. बहुत ही सुंदर, प्यारी सी लड़की है. सिर्फ 30 साल की है. यहां पर वह 15 साल की थी, तब आई थी क्योंकि उस का किसी ने रेप कर दिया था. अब वह 15 साल बाद 30 की हो गई. हमारे इस आश्रम में हम लड़कियों की शादी भी करवाते हैं पर यह किसी लड़के को चाहती है. उसे मेरी मदद की जरूरत है. अब मैं यहां इतने सालों से रह रही हूं तो मेरी बात को ये लोग महत्त्व देते हैं. उसी के लिए आजकल मैं कोशिश कर रही हूं. उस की शादी उस लड़के से हो जाए तो अच्छी बात है.’’

‘‘अर्चना, तेरी कहानी के बीच में यह प्रिया की कहानी और शुरू हो गई. अब तू बता तुम्हारी संस्था का क्या नाम है? मुझे तो पूरी रात यही बात परेशान कर रही थी?’’

‘‘सबकुछ बताऊंगी नीरा, तसल्ली रख. हमारी संस्था का नाम 'आनंद आश्रम' है. इस में कई संस्थाएं हैं. वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम और गर्ल्स कालेज. इस के अलावा कई तरह की ट्रेनिंग भी दी जाती है. चेन्नई शहर से काफी दूरी पर है. बस से आजा सकते हैं. इस का कैंपस बहुत बड़ा है.’’

‘‘यार अर्चना, तू तो इस की तारीफों के पुल बांध रही है.’’

‘‘नीरा, तुम्हें एक बात बताऊं जब मैं शुरू में यहां आई तो बहुत ही परेशान थी परंतु बाद में मुझे इस जगह से बड़ा प्रेम हो गया. अनाथाश्रम की लड़कियों को भी हम पैरों पर न केवल खड़ा करते हैं बल्कि अच्छा वर देख कर उन की शादी भी कर देते हैं. अब प्रिया की शादी जुलाई में होगी. नीरा तुम भी आना और इस बहाने मुझ से भी मिल लोगी.’’

‘‘अर्चना, तुम कहां से कहां पहुंच गईं? मुझे अपनी कहानी पहले पूरी बताओ? फिर क्या भैया ने तुम्हें निकाल दिया.’’

‘‘हां, हां, यही तो बता रही थी, बीच में प्रिया की समस्या आ गई थी. उसे मैं ने ठीक कर दिया. ऐसा है, मेरे भैया ने तो कह दिया, 'तुम डिलीवरी करा सकती हो पर तुम्हें ऐसी जगह भेजूंगा कि तुम्हारा संबंध हम से तो क्या, किसी पहचान वाले से नहीं होना चाहिए? क्या इस बात के लिए तुम राजी हो?' मुझे तो बच्चा चाहिए था, मैं ने पक्का सोच लिया था. भैया ने कह दिया कि तुम्हारी मरजी, खूब अच्छी तरह सोच लो. मैं ने तो पक्का फैसला कर

लिया था तो भैया ने मुझे साउथ में एक छोटे शहर में, जहां मेरी बड़ी बहन रहती थी, उस के यहां भेज दिया. फिर बोले कि यहां तुम सिर्फ डिलीवरी करवाओगी. उस के बाद तुम्हारे रहने के लिए मैं दूसरी जगह इंतजाम कर दूंगा. खर्चा भी भैया ने ही भेजा. बहन से कह दिया गया, इस का आदमी अरब कंट्री में नौकरी के लिए गया हुआ है.''

''तुम्हारी बहन ने मान लिया?''

''हां, लव मैरिज कर ली, बता दिया. फिर इस 'आनंद आश्रम' ने मुझे सहारा दिया. 3 महीने के बच्चे को ले कर मैं यहां आ गई. शुरू में तो भैया थोड़ेथोड़े रुपए भेजते. मैं क्वालिफाइड तो थी, फिर मैं ने यहीं पर सर्विस कर ली और यहीं पर शिशुगृह भी है. बेटे को वहीं पर छोड़ देती थी. शाम को बच्चे को अपने पास ले लेती. बच्चा बहुत ही प्यारा था. हर कोई उसे उठा लेता था. इसलिए कोई ज्यादा परेशानी नहीं हुई. भैया के घर जाती तो भैया की बदनामी होती और मेरी भतीजियों की भी शादी की समस्या हो जाती.''

''जब नौकरी कर रही थी तो अनाथाश्रम में रहने की क्या जरूरत थी?''

''मेरी सुरक्षा का तो प्रश्न था? यहां तो बाउंड्री वाल से बाहर कहीं जा नहीं सकते थे. बेटे की सुरक्षा भी थी.''

''अर्चना, तुम बुरा मत मानना, तुम में हिम्मत की तो कमी थी. आजकल ऐक्टर नीना गुप्ता 'मेरा बच्चा है' कह कर रख रही है न? करण जौहर को देखो, 2-2 बच्चे.''

''यह बात नहीं है नीरा. आज से 40 साल पहले की बात सोच. हम तो साधारण मध्यवर्गीय लोग बहुत ज्यादा डरते हैं. तुझे तो पता ही है. मैं ने गलती की, उस की सजा मुझे मिलनी चाहिए.''

''अरी पागल, तू ने कोई गलती नहीं की, मनुष्य को जैसे भूख लगती है, ऐसे ही इस उम्र में शरीर की भूख होती है. कामशक्ति को भी शांत करना जरूरी है. इस शारीरिक भूख को भी यदि तरीके से शांत न किया जाए तो कई मनोवैज्ञानिक व शारीरिक परेशानियां हो जाती हैं. तुम 35 साल की हो गई थीं. तुम्हारी शादी नहीं हो रही थी. उसी समय तुम्हारा एक आकर्षक व्यक्तित्व से मिलना, उस का भी तुम्हारी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक बात थी. तुम ने जो कदम उठाया वह गलत था, यह तो मैं नहीं कहूंगी. इस उम्र में गलती हो सकती है, उसे सुधारना चाहिए था. गलती मनुष्य से ही होती है. फिर आगे क्या हुआ, यह बताओ?''

''बेटा पढ़ लिया. बेटा होशियार था. सब ने मदद की. मैं भी वहीं पर नौकरी करती थी. पर बहुत ही कम रुपयों पर. खानापीना फ्री था ही, हाथखर्ची हो जाती थी.''

''पर बता तू ने किसी से संबंध क्यों नहीं रखा?''

''भैया ने मना कर दिया था न, तुम किसी से संपर्क नहीं रखोगी? मुझे उन की बात रखनी थी न. बदनामी का मुझे भी डर था.''

''भैया ने तुम्हारी सुध नहीं ली?''

''नहीं, ऐसी बात नहीं. भैया तो मेरी राजीखुशी का समाचार पूछते रहते थे. जबतब रुपए भी भेजते थे.''

''तुम से मिलने कोई नहीं आया?''

''एक बार भैया आए थे और एक बार भाभी आई थीं. पर मेरा समय ही खराब रहा कि भैया और भाभी दोनों ही बहुत जल्दी एक साल के अंदर ही गुजर गए. एक बार बड़ा भतीजा आया था, उसी समय मैं ने उस को नंबर दे दिया था. तभी तो इतने दिन बाद तुम्हें मेरा नंबर मिल गया. यह मेरा अहो भाग्य.''

''तुम अज्ञातवास में रहीं. मैं ने सुना, रामायण में एक प्रसंग आता है कि अहिल्या को भी इसी तरह अज्ञातवास में रहना पड़ा. खुद ही खेती करती, फसल उगाती, उसे स्वयं अकेले काटती और स्वयं ही बना कर खातीपीती रही. जैसे लोगों ने फैला दिया अहिल्या पत्थर की शिला नहीं थी, उस ने तो कठोर अज्ञातवास ही सहन किया था, जिसे तुम भुगत रही हो. सचमुच में अज्ञातवास में रहना बहुत ही कष्टकारक है. खाना, कपड़ा और मकान जितना जरूरी है, हमें अपने लोग, हमारी पहचान इस की भी बहुत जरूरत है. इस के बिना रह कर तुम ने कितना कष्ट महसूस किया होगा, मैं सोच सकती हूं. इस लौकडाउन में तो हर कोई तुम्हारी तकलीफ को महसूस कर सकता है परंतु इस समय तो इंटरनैट, मोबाइल सबकुछ है, उस समय तुम ने अपना समय कैसे काटा होगा?''

''नीरा, अब तो मेरा समय निकल गया. अब तो मेरी कइयों से दोस्ती हो गई. जो गलती हो गई, उस का फल भुगत लिया.''

''बारबार गलती मत कर, अर्चना. मुझे एक बात का दुख है कि तू समाज से अपने हक के लिए लड़ी नहीं. जिस आदमी ने तुझे धोखा दिया वह आराम से रह रहा है. तू तो उस के बारे में नहीं जानती पर उस ने तो शादी भी कर ली होगी, बीवीबच्चे भी होंगे उस के, वह तो आदमी है, उस के सात खून माफ हैं? हम स्त्रियों की कोख है और हम मोहवश बच्चे को भी छोड़ना नहीं चाहतीं. यही हमारी कमजोरी है और हम बदनामी से डरते हैं.''

''अब क्या हो सकता है नीरा, जो बीत गई सो बीत गई.''

''अब तू वहां क्यों रह रही है? तेरा बेटा तो अब कमाने लगा, विदेश में रहता है.''

''जैसे ही मेरा बेटा कमाने लगा, मैं ने मकान ले लिया और हम सुविधापूर्वक रहने लगे. बेटे की शादी भी हो गई. बहू आ गई और 2 बच्चे भी हो गए. फिर उसे एक अच्छा औफर मिला तो वह विदेश चला गया.''

''तू क्यों नहीं गई?''

''मैं ने 3 बार वीजा के लिए अप्लाई किया था पर अफसोस मुझे नहीं मिला. मैं वहीं रहती रही. फिर मुझे लगा, इस उम्र में अकेले रहना मुश्किल है. तब मैं सारे सामान को जरूरतमंद गरीबों में बांट कर यहां सेवा करने के लिए आ गई. मेरे बेटे ने बहुत मना किया. मुझे देखने वाला कोई नहीं है. कल कोई हारीबीमारी हो तो कौन ध्यान रखेगा? यहां लोग तो हैं. मैं ने इन लोगों से रिक्वैस्ट की. ये लोग मान गए. पहले कुछ रुपए देने की बात हुई थी पर ये लोग मुकर गए, कहने लगे कि तुम्हारा बेटा कमाता है. खैर, खानापीनारहना फ्री है और खर्चे के लिए बेटा पैसे भेज देता है.''

''यह जिंदगी तुझे रास आ गई?''

''रास आए न आए, क्या कर सकते हैं? एक बात सुन, मेरी भोपाल जाने की इच्छा हो रही है. हम दोनों चलें.''

''अर्चना, बड़ा आश्चर्य... अभी भी तेरे मन के एक कोने में सब से मिलने की इच्छा हो रही है? अब कितनी मुश्किल है? हम दोनों 77 साल के हो गए. इस समय जाना ठीक नहीं है. अभी तो कोरोना है. मेरे घर वाले भी नहीं भेजेंगे. एक चेंज के लिए कभी हो सका तो चलेंगे. अभी अपनी फोटो भेज. मैं भी अपनी भेजती हूं.''

''मेरे पास तो स्मार्टफोन नहीं है. बेटे ने ले कर देने के लिए कहा था पर मैं ने ही मना कर दिया. खैर, कोई बात नहीं, प्रिया के मोबाइल से भेज दूंगी. उस का नंबर तुम्हें दूंगी. तुम उस में भेज देना. प्लीज, मुझे फोन करते रहना. क्या मैं तुम्हें फोन कभी भी कर सकती हूं?''

''जरूर, तू ऐसे क्यों बोली, मुझे बहुत रोना आ रहा है? तू इतनी दयनीय कैसे बन गई? तुम कैसी थीं और कैसी हो गईं? यार, तुम्हारी क्या हालत हो गई.''

''नीरा, 60 साल बाद मुझे जो खुशी मिली, उस को कैसे भूल जाऊंगी. अब मैं सही हो जाऊंगी, देख, मरने के पहले किसी को यह कहानी सुनाना चाहती थी. तुम्हें सुना दी. मैं हलकी हो गई. गुडबाय, फिर मिलेंगे.''

''गुडबाय, गुडनाइट'' कह कर मैं ने फोन रख दिया.

अपनी सहेली के मिलने की खुशी मनाऊं या उस की बरबादी पर रोऊं? कुछ समझ में नहीं आ रहा. हमारा समाज आखिर कब बदलेगा... ●

हनी... प्रैग्नैंसी शादी के बाद

कई बार शादी से पहले ही लड़की का गर्भ ठहर जाता है. ऐसे कई मामले आसपास देखने को मिल जाते हैं. ऐसे मामले जैसेतैसे निबटा तो लिए जाते हैं पर इस के परिणाम बहुत बार लड़की को शारीरिक व मानसिक आघात पहुंचाते हैं

दोपहर को लगभग 1 बजा था. डाक्टर रमा श्रीवास्तव अपने अस्पताल में रोज की तरह इलाज के लिए आई महिलाओं को देख रही थीं. अगले मरीज के रूप में उन के सामने 24 साल की एक लड़की आई. डाक्टर रमा कुछ सवाल करतीं, उस से पहले ही लड़की बोल पड़ी–

''बौयफ्रैंड से सैक्स करने के बाद मुझे प्रैग्नैंसी कंसीव हो गई है. हम अभी शादी नहीं करना चाहते. इस कारण से एबौर्शन कराना चाहती हूं.''

लड़की ने ऐसे आत्मविश्वास के साथ यह बात कही कि डाक्टर रमा चौंक गईं. वे संभल कर बोलीं, ''तुम्हारे साथ कोई आया है, उसे अंदर बुला लो.''

''नहीं डाक्टर, मेरे साथ कोई नहीं आया है. एबौर्शन कराने भी मैं अकेली ही आऊंगी,'' लड़की बोली.

''तुम्हें इस बात का कोई अफसोस नहीं है कि तुम शादी से पहले मां बनने वाली हो. अगर वह लड़का शादी से इनकार कर देगा तो क्या होगा?'' डाक्टर रमा ने उसे समझाने का प्रयास किया.

''डाक्टर, मैं ने सैक्स अनजाने में नहीं किया. सेफ सैक्स पीरियड की गणना करने में गलती हो गई, जिस से प्रैग्नैंसी हो गई. मैं सर्विस में हूं. मुझे इन बातों से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता. मैं सेफ एबौर्शन चाहती हूं, इस के लिए आप के पास आई हूं.''

डाक्टर रमा लड़की के आत्मविश्वास और युवा पीढ़ी में आए बदलाव को महसूस करने की कोशिश कर रही थीं.

यह उदाहरण केवल एक डाक्टर के यहां देखने को नहीं मिलता है. दूसरे डाक्टरों से बात करने पर पता चलता है कि प्रैग्नैंसी को ले कर लड़कियों का नजरिया बदल रहा है.

डाक्टर नमिता के पास शाम को 6 बजे

एक लड़की आई. अपनी परेशानी बताते उस ने कहा, ''डाक्टर साहब, मुझे एक माह की प्रैग्नैंसी थी. उस के एबौर्शन के लिए मैं ने एबौर्शन पिल्स खा ली थीं. उस के बाद मुझे ब्लीडिंग हुई. दवा खाए 10 दिन बीत गए हैं. पर मुझे अभी भी ब्लीडिंग होती है.''

डाक्टर नमिता ने लड़की का अल्ट्रासांउड कर के देखा तो पाया कि एबौर्शन की दवा से लड़की के गर्भाशय की सफाई पूरी तरह से नहीं हुई है. गर्भ के कुछ टुकड़े उस में रह गए हैं, जिस से ब्लीडिंग हो रही है. इस के लिए डाक्टर ने लड़की को दोबारा एबौर्शन कराने की सलाह दी.

लड़की का लड़के से सैक्स रिलेशन है. जिस के चलते उसे प्रैग्नैंसी हो गई. लड़की ने यह भी बताया कि वे दोनों शादी नहीं करना चाहते. केवल दोस्ती को एंजौय कर रहे हैं. लड़की रात में एबौर्शन कराना चाहती थी. जिस से उसे रातभर अस्पताल में आराम करने को मिल जाए. अगले दिन वह सामान्य रूप से काम करना चाहती थी.

छोटे शहरों में भी बदली मानसिकता

शादी से पहले प्रैग्नैंसी को ले कर मानसिकता में बदलाव केवल बड़े शहरों में ही नहीं हुआ है, छोटे शहरों में भी हालात बदल रहे हैं. लखनऊ के करीब के बाराबंकी जिले में रहने वाली एक लड़की का अपने दोस्त के साथ सैक्स करने से प्रैग्नैंसी कंसीव हो गई. यह बात उस के घरवालों को पता चली. वे लड़की का एबौर्शन कराने के लिए एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ले गए. वहां मौजूद दाई ने लड़की का एबौर्शन करने के दौरान कोई गलत इंजैक्शन लगा दिया. जिस के बाद लड़की की हालत खराब होने लगी. लड़की को लखनऊ के सिविल अस्पताल भेजा गया. इस के पहले कि सिविल अस्पताल के डाक्टर उस का इलाज करते, लड़की की मौत हो गई.

उत्तर प्रदेश महिला आयोग के कार्यालय में शिकायत की एप्लीकेशन लिए भटक रही एक लड़की से उस के प्रेमी ने शादी का झांसा दे कर सैक्स संबंध बनाए. इस बीच वह गर्भवती हो गई. जब लड़की ने शादी करने के लिए लड़के पर दबाव डाला तो वह घरवालों की नाराजगी की बात कह कर दूर हट गया. प्रेमी को सबक सिखाने के लिए लड़की पहले एसपी, लखनऊ, के पास गई. इस के बाद महिला आयोग आ गई. लड़की के घरवाले पूरे मामले को जानते हैं. वे लड़की को एबौर्शन कराने की सलाह भी दे रहे थे.

कई लड़कियों के बीच किए गए सर्वे समाज के हालात पेश करते हैं. सर्वे में 23 प्रतिशत लड़कों और 21 प्रतिशत लड़कियों ने माना कि शादी से पहले सैक्स के हालात उन के सामने आए थे. 19 प्रतिशत लड़कों और 9 प्रतिशत लड़कियों ने माना कि शादी से पहले उन लोगों ने सैक्स किया है. 28 प्रतिशत लड़कों और 49 प्रतिशत लड़कियों ने माना कि उन के परिवार के लोग इस बारे में जानते थे.

बदनामी का भय नहीं

इस तरह की ज्यादातर समस्याएं सब से पहले अस्पतालों और पुलिस के पास पहुंचती हैं. लड़कियों की गुमशुदगी के ज्यादातर मामले प्रेम संबंधों के कारण होते हैं. इन में बहुत सारे मामलों में लड़कियां अपनी मरजी से प्रेमी के साथ घर से बाहर जाती हैं. कुछ दिनों बाद जब घरपरिवार की नाराजगी कम हो जाती है तो वापस लौट आती हैं. जिन की लड़कियां वापस आ जाती हैं वे पुलिस के पास यह बताने नहीं आते कि लड़की वापस आ गई है. जब कोई अनहोनी हो जाती है, तभी मामला पुलिस के पास आता है.''

समाजशास्त्री डा. दीपा सनवाल कहती हैं, ''पहले लड़कियों को बदनामी का डर होता था. इसलिए वे शादी से पहले प्रैग्नैंसी से बचती थीं. अब शहर बड़े हो गए हैं, लोग एकदूसरे से कम मतलब रखने लगे हैं. ऐसे में किसी के बारे में सामने वाले को कम पता होता है. अगर किसी को पता होता भी है तो वह कुछ समय के बाद भूल जाता है.

''पहले शादी का रिश्ता आपसी लोगों ओर रिश्तेदारों द्वारा तय कराया जाता था. इस कारण बदनामी का असर ज्यादा होता था. अब वैवाहिक विज्ञापनों से शादी तय होती है. जहां पर एकदूसरे के बारे में इतनी जानकारियां नहीं हो पाती हैं. इसलिए लड़कियों का राज खुलने का भय खत्म हो गया है.''

गर्भनिरोधकों का असर

डाक्टर रमा श्रीवास्तव कहती हैं, ''गर्भ निरोधकों, इमरजैंसी पिल्स और एबौर्शन पिल्स जैसी दवाओं ने सैक्स के बाद गर्भ ठहरने के भय को खत्म कर दिया है. इमरजैंसी पिल्स का उपयोग रैगुलर गर्भनिरोधक के रूप में किया जा रहा है. सैक्स अब लड़कियों के लिए भी कोई अजूबा नहीं रह गया है. बहुत सारी लड़कियां तो अनहोनी होने के बाद सबक नहीं लेतीं. उन्हें यह सब एक ऐक्सिडैंट सा लगता है. दुर्घटना से लगी चोट के ठीक होने के बाद दोबारा वही गलती दोहराते समय किसी तरह का कोई भय दिल में नहीं रहता है.''

डा. रमा आगे कहती हैं, ''इमरजैंसी पिल्स रैगुलर प्रयोग करने से शरीर में कई तरह के बदलाव होने लगते हैं. हड्डियों की कमजोरी, कमरदर्द, हैवी ब्लीडिंग और बांझपन जैसी मुसीबतें सामने आ सकती हैं. इस के अलावा बिना बाहरी सुरक्षा के सैक्स करने से यौनरोग और एड्स जैसी जानलेवा बीमारियां भी हो सकती हैं. इमरजैंसी पिल्स केवल इमरजैंसी के लिए होती हैं, इन को रैगुलर लेना ठीक नहीं होता. इन के असर से पीरियड्स रैगुलर नहीं होते.''

जल्दी हो जाती है शादी

शादी से पहले प्रैग्नैंसी की लाख हानियों के बाद भी इस का समर्थन करने वालों के भी रोचक तर्क हैं. 3 साल से लिवइन रिलेशनशिप में रह रही वंदना बताती है, ''हम लोग शादी के लिए समय नहीं निकाल पा रहे थे. उसी बीच एक बार गर्भ ठहर जाने के बाद हम लोग शादी करने के लिए तैयार हो गए. हम ने अपने घरों में भी बात कर ली और वे लोग इस बात के लिए तैयार हो गए कि गर्भ का पता चलने से पहले ही शादी कर लो. वे चाहते थे कि समाज में बात फैलने से पहले शादी हो जाए.''

लिवइन रिलेशनशिप जैसे मुद्दों पर कानूनी और सामाजिक स्वीकृति मिलने के बाद डर पूरी तरह से खत्म हो गया है. लड़कियों को लगता है कि शादी से पहले गर्भवती होने के बाद जो प्रेमी शादी के लिए समय नहीं निकाल पा रहा था वह तुरंत इस के लिए तैयार हो जाता है. कुछ अविवाहित सैलिब्रिटी जब शादी के बिना बच्चा पैदा करने की बात कहते हैं तो समाज के लोगों को उस से बल मिलने लगता है. सैक्स अब पहले जैसा हौआ नहीं रहा.

शादी तक रहता है तनाव

शादी से पहले अगर गर्भ ठहर गया है तो तब तक मन परेशान रहता है जब तक शादी न हो जाए. यह तनाव मां और उस के पेट में पलने वाले बच्चे दोनों के लिए घातक होता है. बिना शादी के गर्भ ठहरने का रिस्क लेना भूल होती है. घरपरिवार के लोग भले ही दबाव में बात को मान लें पर पूरी जिंदगी एक कांटा सा मन में चुभता रहता है. कभीकभी पैदा होने वाले बच्चे को बड़े होने पर यह पता चलता है तो उसे भी खराब लगता है. तर्क कुछ भी दिए जाएं, पर शादी से पहले गर्भवती होना ठीक नहीं होता है. समाज की मानसिकता अभी नहीं बदली है.

कई बार शादी से सगाई के बीच के समय में भी यह हो जाता है. ऐसे में कभीकभी शादी टूट जाने की घटना भी घट जाती है. मन पर जब तक सबकुछ सही से न हो जाए तब तक तनाव बना रहता है. प्रैग्नैंसी का सुखद एहसास मन नहीं कर पाता है. शादी से पहले गर्भवती होने में खतरे ज्यादा हैं. शायद यही वजह है कि लड़कियां ऐसे मामलों में सब से पहले गर्भ से छुटकारा पाना चाहती हैं. इस के लिए वे गोलियों से ले कर एबौर्शन तक का उपाय करती हैं जो कई तरह की बीमारियों को जन्म देती हैं. इसलिए शादी से पहले प्रैग्नैंसी को भूल जाना ही समझदारी होती है.

–शैलेंद्र सिंह ●

दिल्ली प्रैस

'नजदीकी रिश्तों' में सांसों की ताजगी ही नहीं विचारों में भी ताजगी होनी चाहिए

पढ़िए सरिता

Email: subscription@delhipress.in | circulation@delhipressgroup.com
Mob: 8588843402

स्वस्थ एवं उज्ज्वल
त्वचा के लिए
New
Dr. Juneja's
रूप मंत्रा
®
Ayurvedic Face Cream & Face Washes
✓ Paraben Free
✓ Alcohol Free
✓ Steroids Free
✓ Silicon Free
✓ Mineral Oil Free
Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
NEEM
MIX FRUIT
ALOEVERA
LIME & MINT
Most Trusted Brand of Asia 2016

24x7 Helpline No.: 87259 66666 | Website: www.roopmantra.com | Available at all medical & general stores

नया साल नई उम्मीद के साथ आता है, इसलिए लोग साल की शुरुआत को खुशनुमा तरीके से मनाते हैं. इस बार चीजें थोड़ी नियंत्रण में हैं तो एहतियात के साथ सजनासंवरना और खुशियां मनाना बनता है तो आइए जानते हैं क्या आउटफिट पहनें.

जब सब की नजर में आप दिखना चाहें नंबर वन

लेख • सोमा घोष

नए साल को हमेशा गर्मजोशी के साथ आमंत्रित किया जाता रहा है. उस दिन चारों तरफ रोशनी से पूरा देश जगमगा उठता है. लेकिन पिछले 2 सालों से कोविड ने सभी उत्सवों के सैलिब्रेशन पर पाबंदी सी लगा दी है. कोविड के कम होने और सभी लोगों के 2 वैक्सीन लग चुकी होने की वजह से इस बार सभी ने न्यू ईयर के सैलिब्रेशन को एक बार फिर अच्छी तरह से मनाने के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं. होटल और रैस्तरां सभी प्रीबुक हो चुके हैं. लेकिन कोविड के औमिक्रोन वैरिएंट के बढ़ने की वजह से महाराष्ट्र में 144 धारा लगा दी गई है ताकि लोग समूह में एक जगह इकट्ठा न हों. यह सही भी है, क्योंकि कोविड की दूसरी लहर का असर समझने के पहले ही काफी लोगों ने अपनी जान गंवाई है. ऐसे में पूरा विश्व अब गलतियां करने से खुद को रोक रहा है पर इतना तय है कि इस बार नए साल को, हलके थोड़े में ही सही, पर मनाएंगे सभी अवश्य.

होड़ लेटैस्ट ट्रैंड की

फैशन हर साल मौसम के अनुसार बदलता रहता है. इसलिए हर साल के ट्रैंड को जानना आवश्यक है. इस बार नए साल की पार्टी में सभी ने कुछ न कुछ तैयारी अपने स्तर पर की है. सब से अधिक उत्साहित यूथ हैं. मुंबई की साक्षी कहती हैं, ''मैं ने नए साल की पार्टी के लिए ब्लैक कलर का शिमरी गाउन सिलवाया है, क्योंकि इस बार यह फैशन में है.''

22 साल की नूपुर ने लैदर स्कर्ट और लैदर जैकेट खरीदी है. इस के अलावा कुछ यूथ फैशन डिजाइनर्स के पास जा कर लेटैस्ट ट्रैंड की पोशाक खरीद रहे हैं, ताकि वे पार्टी में सैंटर औफ अट्रैक्शन बने रहें. गर्ल्स उस दिन लाइटवेट ड्रैस अधिक प्रिफर करती हैं. न्यू ईयर पार्टी में अधिकतर वैस्टर्न वियर ही पहने जाते हैं. इस में वन पीस, शौर्ट ड्रैस पहनने से इसे संभालना आसान होता है.

एंजौय करना है प्राथमिकता

नए साल के फैशन ट्रैंड के बारे में पूछे जाने पर सैलिब्रिटी डिजाइनर श्रुति संचेती कहती हैं, ''कोविड की वजह से सभी ने पिछले 2 सालों से घर के कपड़े पजामा और टीशर्ट के साथ ही नए साल का स्वागत किया था, लेकिन इस साल सभी ने एंजौय करने को सोचा था, लेकिन औमिक्रोन ने इस पर थोड़ी पाबंदी लगा दी है. मेरे हिसाब से कमोबेश सभी नजदीक के रैस्तरां और होटलों में जाएंगे, लेकिन छोटे ग्रुप्स में जाएंगे और कोविड में वही सही भी रहेगा. इस बार चीयरफुल, ग्लिटरी, सीक्वैंस, शाइनी और शिमर वाली ड्रैसेस फैशन में हैं. ट्रैंड में रैड और ब्लैक पार्टी कलर हावी रहेगा, क्योंकि इन दोनों रंगों की ड्रैस काफी स्टाइलिश हैं, जो पार्टी में काफी हौट और बोल्ड लुक देती हैं.''

ब्राइट कलर्स, जिस में बरगंडी, वाइन, बौटल ग्रीन, पर्पल और रौयल ब्लू जैसे डार्क कलर्स आते हैं और जो विंटर के चर्चित रंग हैं, उन की प्राथमिकता रहेगी. इस के अलावा सीक्वैंस के जैकेट, एक ही रंग के पैंट, जैकेट और टौप होंगे. ये इस साल यूथ को बहुत पसंद आ रहे हैं. ये नए साल के फैशन ट्रैंड में भी हैं. इन में भी डार्क कलर्स के साथ ब्राइट प्रिंट होने पर उत्सव का रंग उन में दिखेगा. लोग घर पर रहरह कर थक चुके हैं, इसलिए वे थोड़ाबहुत फैशन के मूड में हैं.

डिजाइनर श्रुति संचेती आगे कहती हैं, ''जो लोग घर से दूर किसी स्थान पर नए साल को मनाने जाते हैं, वे मैक्सी, कफ्तान, शौर्ट्स आदि पहन सकते हैं. इस साल में बदलाव बहुत आया है.

''एक्सेसरीज की अगर बात करें तो एकसाथ कई चेन्स गले में पहनना या एक अच्छे कान के सैट को पहनना ट्रैंड में है. अधिक एक्सेसरीज इस बार फैशन में नहीं है. इसलिए ड्रैस के अनुसार एक्सेसरीज पहनें. इस बार सभी उत्साहित हैं, पार्टियां छोटी रहेंगी पर स्पिरिट उतनी ही हाई रहेगी.''

ट्रैंड फ्लौवरी फैशन का

डिजाइनर राहुल मिश्रा के कपड़े हाईएंड क्लासी फैशन में आते हैं. लेकिन इस साल उन्होंने नए साल के लिए भी कुछ नए क्रिएशंस मार्केट में उतारे हैं. उन का कहना है कि नए साल में मुंबई जैसे शहर, जहां कम ठंड होती है, में गर्ल्स लाइट फ्रीफ्लोइंग, फ्लौवरी, शिफौन की ड्रैस, फ्रौक्स पहन सकती हैं. लेकिन ठंड वाले स्थानों पर फुलस्लीव शौर्ट ड्रैस, लैदर जैकेट, शौर्ट स्कर्ट, गाउंस आदि पहनें तो अच्छा रहेगा. वाइब्रैंट कलर्स, जिस में औरेंज, रैड, ब्लैक, ग्रीन आदि प्रमुख होने के साथसाथ, उस पर मोटिफ्स, एंब्रौयडरी, नैट्स, सीक्वैंस आदि किसी को भी एक नया लुक दे सकते हैं.

इस बार नए साल में खूबसूरत पोशाक के साथ मेकअप ट्रैंड हलका और न्यूड ही रहेगा, ताकि ड्रैस के साथ मेकअप मैच करते हुए एक खूबसूरत मुसकान हो. लेकिन इन सब के साथसाथ फौलो करना होगा कोविड के नियम, ताकि आप बाद में भी स्वस्थ रहें और नए साल को एंजौय करें. ●

फूटती जवानी का जोश और दोस्तों के साथ मस्ती. इस से बेहतर क्या होगा. पर जोश में होश खोने का अंजाम क्या हो सकता है, यह हम आप को बताते हैं.

लेख ● सुनील शर्मा

जवां पार्टी : कदम लड़खड़ा न जाएं

घटना है उत्तर प्रदेश के पौश इलाके ग्रेटर नोएडा की, तारीख थी 12 दिसंबर, 2021. एक हाई प्रोफाइल सोसाइटी की 7वीं मंजिल से एक लड़की गिर गई. उसे बहुत ज्यादा चोटें आईं.

पुलिस ने बताया कि वह लड़की पश्चिम बंगाल की रहने वाली है और हरियाणा के पानीपत में रहती है. 12 दिसंबर, 2021 को वह ग्रेटर नोएडा में रह रहे अपने एक दोस्त से मिलने आई थी. आधी रात के आसपास लड़की अचानक 7वीं मंजिल से नीचे गिर गई. घायल लड़की को पुलिस ने अस्पताल पहुंचाया. शुरुआती जांच में पुलिस को यह पता चला है कि वह लड़की नींद और नशे में होने की वजह से खिड़की से नीचे गिर गई.

लड़की के दोस्त ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि लड़की से उस की मुलाकात होती रहती थी. जब भी वह यहां आती थी तो उसी के फ्लैट में रहती थी.

लड़की के दोस्त ने पुलिस को यह भी बताया कि जिस दिन यह घटना हुई, उस रात दोनों ने पार्टी की थी और आधी रात के वक्त जब लड़की बाथरूम गई तो खिड़की से नीचे गिर गई.

इसी तरह 1 दिसंबर, 2021 को बिहार के भागलपुर शहर के आसपास एक घटना घटी. दरअसल, कटिहार के बरारी निवासी शुभम का जन्मदिन था. कुछ दोस्त उस का जन्मदिन मनाने बरारी गए थे और जन्मदिन की पार्टी मना कर कार से नवगछिया लौट रहे थे. राष्ट्रीय राजमार्ग पर रंगरा चौक से 500 मीटर पहले एक ट्रक खड़ा था. रात में अंधेरा होने की वजह से कार ट्रक से टकरा गई.

इस घटना में एक युवा आशीष मारा गया और उस के 4 दोस्त भागलपुर बरारी निवासी मिल्टन उर्फ सत्यव्रत, इस्माइलपुर भिट्ठा निवासी नीरज कुमार, नयाटोला निवासी ज्योतिष कुमार, कटिहार के बरारी निवासी शुभम कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए.

ये 2 अलगअलग तरह के हादसे हैं. पहले हादसे में 2 जने पार्टी कर रहे थे. वे घर पर थे और लड़की आधी रात को 7वीं मंजिल से गिर गई. जब वह गिरी तब नशे में थी और उस के बदन पर एक भी कपड़ा नहीं था.

संभावना है कि वह लड़की और पार्टी में शामिल लड़का रिलेशनशिप में हों और उन में सैक्स भी हुआ हो और चूंकि लड़की ने किसी तरह का नशा किया था तो वह संभल नहीं पाई और यह हादसा हो गया.

दूसरे मामले में रात का समय था और चंद दोस्त कार से अपने घर लौट रहे थे. वे पार्टी मूड में थे, पर सामने खड़े ट्रक पर ध्यान नहीं दे पाए और कार उस में भिड़ा दी.

पार्टी करना कोई बुराई नहीं है और किसी के घर पर पार्टी करने का मजा भी अलग ही होता है, पर जब हम किसी नशे या लापरवाही के चलते आने वाले खतरे पर ध्यान नहीं दे पाते हैं, तब उस का नतीजा बहुत भयावह भी हो जाता है.

सड़क पर गाड़ी चलाते हुए दोस्तों की आपसी बातचीत में बहुत से नौजवान सड़क के नियमों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं. वे स्पीड में गाड़ी चलाते हैं और अगर नशे में होते हैं तो वह गाड़ी किसी 'मानव बम' से कम नहीं होती है. 'ड्रिंक ऐंड ड्राइव' के खिलाफ तो ट्रैफिक पुलिस मुहिम भी चलाती है. बारबार यह भी समझाया जाता है कि अगर आप किसी पार्टी से रात को घर आ रहे हैं तो नशे में गाड़ी चलाने से बचें या फिर किसी कैब से घर आएं. पर युवा पीढ़ी इस पर अमल करना अपनी शान के खिलाफ समझती है और अकसर बड़ी मुसीबत में फंस जाती है.

कहने का मतलब यह है कि पार्टी करने में कोई बुराई नहीं है, बल्कि दोस्तों के साथ चंद पल गुजारने पर आप का मानसिक तनाव कम होता है, पर जब आप के कदम लड़खड़ा रहे हों या आप देररात अपनी गाड़ी से घर लौट रहे हों तो थोड़ा सतर्क रहें और सुरक्षित घर पहुंचें, क्योंकि अगली पार्टी का मजा भी तो आप को लेना है. ●

कठिन समस्याएं अब न होंगी

सच्ची सहेली है
बेहतर स्वास्थ्य के
लिए सबसे भरोसेमंद
औषधि एवं टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

पूर्ण स्वदेशी, पूर्ण आयुर्वेदिक

टॉनिक के साथ पाएं
20 टेबलेट्स Free

67 दुर्लभ जड़ी-बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक निम्न समस्याओं में विशेष सहायक है।

सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
67 जड़ी-बूटियों से बना, महिलाओं के लिए भरोसेमंद आयुर्वेदिक टॉनिक

Helps in:

- कठिन दर्द
- चिड़चिड़ापन
- थकान
- कमज़ोरी
- कमर कटना
- इम्यूनिटी

सच्ची सहेली®

24x7 Helpline : 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli | Available at all medical & general stores

अब कोई नाता नहीं

कहानी • ताराचंद मकसाने

कोविड महामारी ने लोगों के बीच दूरियां जरूर बढ़ाई हैं पर किसी के लिए कोरोना लकी साबित हुआ है. जब सुमित ने अपनी अलग दुनिया बसा ली तो उस से नाता न रखने की ठान कर ताऊ ने अतुल को अपना बना लिया.

''मुझे माफ करना, अतुल. मैं ने तुम्हारा बहुत अपमान किया है, तिरस्कार किया है और कई बार तुम्हारा मजाक भी उड़ाया है. मगर आज जब मुझे अपने बेटे की सब से ज्यादा जरूरत थी तब तुम ही मेरे करीब थे. अगर आज तुम न होते तो न जाने मेरा क्या हाल होता. मैं शायद इस दुनिया में न होता. अतुल बेटा, हम दोनों तो बिलकुल अकेले पड़ गए थे. अब तो मुझे सुमित को अपना बेटा कहने में भी शर्म आ रही है. उसे विदेश क्या भेजा, वह विदेशी हो कर रह गया, मांबाप को भी भूल गया. अब मेरा उस से कोई नाता नहीं,'' यह कहते हुए कांता प्रसाद फफकफफक कर रो पड़े, उन्होंने अतुल को खींच कर अपने गले से लगा लिया.

अतुल की आंखें भी नम हो गईं. वह अतीत की यादों में खो गया. अतुल के पिता रमाकांत की एक छोटी सी मैडिकल शौप थी जो सरकारी अस्पताल के सामने थी. परिवार की आर्थिक स्थिति विकट होने से अतुल ज्यादा पढ़ नहीं पाया था. कक्षा 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद उस ने फार्मेसी में डिप्लोमा किया और अपने पिता के साथ दुकान में उन का हाथ बंटाने लगा.

एक ही शहर में दोनों भाइयों का परिवार रहता था मगर रिश्तों में मधुरता नहीं थी. कांता प्रसाद और छोटे भाई राम प्रसाद के बीच अमीरीगरीबी की दीवार दिनबदिन ऊंची होती जा रही थी. दोनों भाइयों के बीच एक बार पैसों के लेनदेन को ले कर अनबन हो गई थी जिस के कारण उन के बीच कई सालों से बोलचाल बंद थी. होलीदीवाली जैसे त्योहारों पर महज औपचारिकता निभाते हुए उन के बीच मुलाकात होती थी.

अतुल के ताऊजी कांता प्रसाद एक प्राइवेट बैंक में मैनेजर थे जो अपने इकलौते बेटे सुमित की पढ़ाई के लिए पानी की तरह पैसा बहा रहे थे. सुमित शहर के सब से महंगे और मशहूर पब्लिक स्कूल में पढ़ता था. जब कभी अतुल उन से बैंक में या घर पर मिलने जाता था तब वे उस का मजाक उड़ाते हुए कहते थे :

'अरे अतुल, एक बार कालेज का तो मुंह देख लेता. अभी 20-22 का हुआ नहीं कि दुकानदारी करने बैठ गया. कालेजलाइफ कब एंजौय करेगा? तेरा बाप क्या पैसा साथ ले कर जाएगा?'

'नहीं ताऊजी, ऐसी बात नहीं है. मेरी भी आगे पढ़ने की इच्छा है और पापा भी मुझे पढ़ाना चाहते हैं पर मैं अपने घर की आर्थिक स्थिति से अच्छी तरह से अवगत हूं. मैं ने ही उन्हें मना कर दिया कि मुझे आगे नहीं पढ़ना है. निशा और दिशा को पहले पढ़ानालिखाना है ताकि वे पढ़लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हो जाएं जिस से उन के विवाह में अड़चन न आए. एक बार उन के हाथ पीले हो जाएं तो मम्मीपापा की चिंता मिट जाएगी. वे दोनों

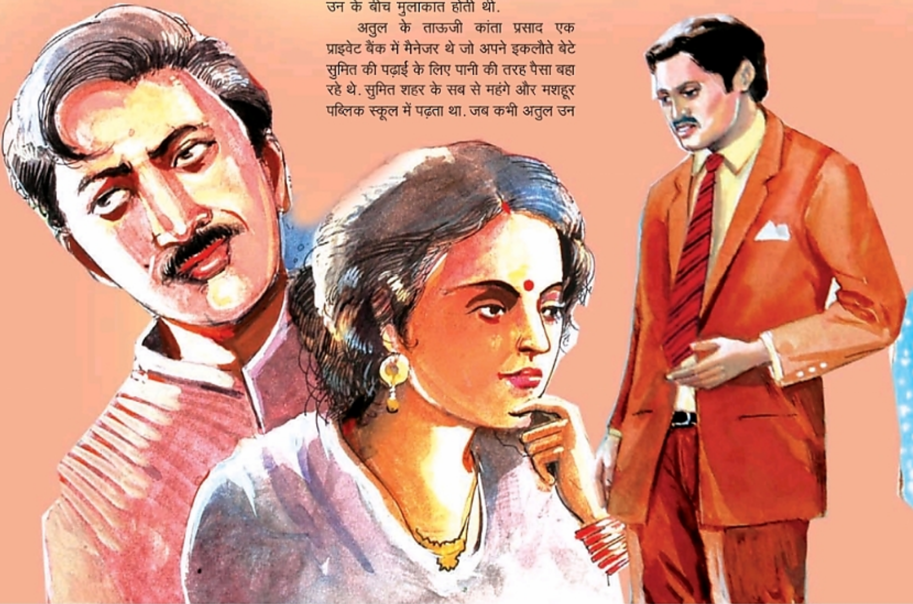

आएदिन निशा और दिशा की चिंता करते हैं. आजकल के लड़के पढ़ीलिखी और नौकरी करने वाली लड़कियां ही ज्यादा पसंद करते हैं. ताऊजी, आप को तो पता ही है कि हमारी मैडिकल शौप से ज्यादा आमदनी नहीं होती. सरकारी अस्पताल के सामने मैडिकल की पचासों दुकानें हैं. कंपीटिशन बहुत बढ़ गया है. फिर आजकल औनलाइन का भी जमाना है. मेरा क्या है, मैं निशा और दिशा की विदाई के बाद भी प्राइवेटली कालेज कर लूंगा पर अभी परिवार की जिम्मेदारी निभाना जरूरी है.’

अतुल ने अपनी मजबूरी बताते हुए कहा तो कांता प्रसाद को बड़ा ताज्जुब हुआ कि अतुल खेलनेकूदने की उम्र में इतनी समझदारी व जिम्मेदारी की बातें करने लग गया है और एक उन का बेटा सुमित जो अतुल की ही उम्र का है मगर उस पर अभी भी बचपना और अल्हड़पन सवार था, वह घूमनेफिरने और मौजमस्ती में ही मशगूल है. कांता प्रसाद के पास रुपएपैसों की कमी न थी. उन के बैंक के कई अधिकारियों के बेटे विदेशों में पढ़ रहे थे, सो कांता प्रसाद ने भी सुमित को विदेश भेजने के सपने संजो कर रखे थे.

वक्त बीत रहा था. सुमित इंजीनियरिंग में बीई करने के बाद एमएस के लिए आस्ट्रेलिया चला गया. इसी बीच कांता प्रसाद बैंक से सेवानिवृत हो गए. पत्नी रमा के साथ आराम की जिंदगी बसर कर रहे थे.

सुमित के लिए विवाह के ढेरों प्रस्ताव आने शुरू हो गए थे. अपना इकलौता बेटा विदेश में है, यह सोच कर ही कांता प्रसाद मन ही मन फूले न समाते थे. अब तो वे जमीन से दो कदम ऊपर ही चलने लगे थे. जब भी कोई रिश्तेदार या दोस्त मिलता तो वे सुमित की तारीफ में कसीदे पढ़ने लग जाते. कुछ दिन तक तो परिवार के सदस्य और यारदोस्त उन का यह रिकौर्ड सुनते रहे मगर धीरेधीरे उन्हें जब बोरियत होने लगी तो वे उन से कन्नी काटने लगे.

वक्त अपनी रफ्तार से चल रहा था. सुमित को आस्ट्रेलिया गए 3 साल का वक्त हो गया था. एक दिन सुमित ने बताया कि उस ने एमएस की डिग्री हासिल कर ली है और वह अब यूएस जा रहा है जहां उसे एक मल्टीनैशनल कंपनी में मोटे पैकेज की नौकरी भी मिल गई है. कांता प्रसाद के लिए यह बेशक बहुत ही बड़ी खुशी की बात थी.

कांता प्रसाद और रमा अभी खुशी के इस नशे में चूर थे कि एक दिन सुमित ने बताया कि उस ने अपनी ही कंपनी में नौकरी करने वाली एक फ्रांसीसी लड़की एडेला से शादी कर ली है. सुमित के विवाह को ले कर सपनों के खूबसूरत संसार में खोए हुए कांता प्रसाद और रमा बहुत ही जल्दी यथार्थ के धरातल पर धराशायी हो गए.

अब तो दोनों अपने घर में ही बंद हो कर रह गए. लड़की वालों के फोन आने पर ‘अभी नहीं, अभी नहीं’ कह कर टालते रहे. कांता प्रसाद और रमा ने सुमित के विवाह की बात छिपाने की बहुत कोशिश की मगर जिस तरह प्यार और खांसी छिपाए नहीं छिपती, उसी तरह सुमित के विदेशी लड़की से विवाह करने की बात उन के करीबी रिश्तेदारों के बीच बहुत ही जल्दी फैल गई. परिणास्वरूप रिश्तेदारों एवं करीबी लोगों ने उन से किनारा करना शुरू कर दिया.

उधर, सुमित दिनबदिन अपने काम में इतना मसरूफ हो गया था कि वह महीनों तक अपने मातापिता को फोन नहीं कर पाता था. यहां से कांता प्रसाद और रमा फोन करते तो वह कभी काम में व्यस्त बता कर या मीटिंग में है, कह कर फोन काट देता था. अब तो कांता प्रसाद और रमा बिलकुल अकेले पड़ गए थे.

छोटीमोटी बीमारी होने पर उन्हें पड़ोसियों का सहारा लेना पड़ता था. मगर हर बार यह मुमकिन नहीं था कि जब उन्हें जरूरत पड़े तब पड़ोसी उन की सेवा में हाजिर हो जाएं.

इसी बीच देश में कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने कहर ढाना शुरू कर दिया. लौकडाउन के कारण कामवाली बाई यशोदा ने आना बंद कर दिया और घरेलू नौकर किशन अपने गांव चला गया. लोग अपनेअपने घरों में बंद हो गए. रमा को दमे की शिकायत थी तो कांता प्रसाद डायबिटिक थे. चिंता और तनाव ने दोनों को और अधिक बीमार बना दिया था.

सुमित इस संकट की घड़ी में व्हाट्सऐप पर ‘टेक केयर, बाहर बिलकुल मत जाना और जाना पड़ जाए तो मास्क पहन कर जाना, सैनिटाइजर का उपयोग करते रहना, बारबार साबुन से हाथ धोते रहना, सोशल दूरी बनाए रखना’ जैसे महज औपचारिक संदेश नियमित रूप से भेज कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता था.

एक दिन रात में कांता प्रसाद को तेज बुखार आया. उन्हें लगा, मौसम बदलने से आया होगा. घर में ही दवा खा ली. मगर बुखार न उतरा. 2 दिनों बाद उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी और मुंह का स्वाद चला गया तब रमा को पता चला कि ये तो कोरोना के लक्षण हैं. रात में करीब एक बजे उन्होंने अतुल को फोन किया और सारी बात बताई. अतुल और उस के पिता ने तुरंत भागदौड़ शुरू कर दी. अतुल ने एक सामाजिक संस्था के यहां से ऐंबुलैंस मंगवाई और अपने पिता के साथ कांता प्रसाद के घर के लिए रवाना हो गया.

बीच रास्ते में अतुल अस्पतालों में बैड की उपलब्धता के लिए लगातार फोन कर रहा था. दोतीन अस्पतालों से नकारात्मक उत्तर मिला, मगर एक अस्पताल में एक बैड मिल गया. अतुल ने कांता प्रसाद को फोन कर के अस्पताल जाने के लिए तैयार रहने के लिए कहा. रात करीब 2 बजे कांता प्रसाद को एक अस्पताल के कोरोना वार्ड में एडमिट कर दिया और ट्रीटमैंट चालू हो गया.

रमा की आंखों में छिपा हुआ नीर आंसुओं का रूप धारण कर उस के गालों को भिगोने लगा जिसे देख अतुल ने कहा, ‘ताईजी, प्लीज आंसू न बहाओ. अब चिंता की बात नहीं है. यह शहर का बहुत अच्छा अस्पताल है. ताऊजी

HEMODEX®

Family Tonic
HEMODEX
Balanced Nutritional Formula
SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्वीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

GROWMED
STOMAQUAR
PROTECTIVE COATING ACTION
PROTECTIVE COATING ACTION

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

जल्दी ही स्वस्थ हो जाएंगे. ताईजी, अब आप हमारे घर चलो. ताऊजी के ठीक होने तक आप हमारे ही घर पर रहना. अस्पताल में कोरोना मरीज के रिश्तेदारों को ठहरने की अनुमति नहीं है.'

रमा का कंठ रुंध गया था. वह बोल नहीं पा रही थी. खामोशी से अतुल के साथ रवाना हो गई.

कांता प्रसाद का औक्सीजन लैवल कम हो जाने से कुछ दिनों तक उन्हें वैंटिलेटर पर रखा गया. फिर उन्हें जनरल वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया. डाक्टरों ने बताया कि समय पर बैड मिल जाने से उन की जान बच गई है.

कुछ ही दिनों के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई. कांता प्रसाद मन ही मन सोच रहे थे कि आज अतुल उन की सहायता के लिए दौड़ कर न आता तो न जाने उन का क्या हाल होता.

इस कोरोना महामारी ने आज इंसान को इंसान से दूर कर दिया है. कोरोना का नाम सुनते ही अपने लोग ही दूरियां बना लेते हैं. ऐसे में अतुल और राम प्रसाद ने अपनी जान की परवा किए बगैर उन की हर संभव सहायता की थी. बुरे वक्त में अतुल ही उन के काम आया था, उन के अपने बेटे सुमित ने तो उन से अब महज औपचारिक रिश्ता बना कर रखा था. वे मन ही मन सोचने लगे कि अब उस से तो नाता रखना बेकार है.

अतुल के साथसाथ कांता प्रसाद भी अतीत की यादों से वर्तमान में लौटे. वे अभी भी अतुल को अपने गले से लगाए हुए थे. अतुल ने अपनेआप को उन से अलग करते हुए कहा, ''ताऊजी, पुरानी बातों को छोड़ दीजिए, मैं तो आप के बेटे के समान हूं. क्या पिता अपने बेटे को डांटताफटकारता नहीं है. फिर आप तो मेरे बड़े पापा हैं. मुझे आप की बातों का कभी बुरा नहीं लगा. अब आप अतीत की कटु यादों को बिसरा दो और अपनी तबीयत का ध्यान रखो. अपनी मैडिकल की दुकान होने से कई बार अस्पतालों में जाना पड़ता है, इसी कारण कुछेक डाक्टरों से मेरी पहचान हो गई है. इसलिए आप को बैड मिलने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई और आप का समय पर इलाज हो गया. अब आप को डाक्टरों ने सख्त आराम की हिदायत दी है.''

बाद में वह ताईजी की ओर मुखातिब होते हुए बोला, ''ताईजी, अब आप ताऊजी के पास ही बैठी रहोगी और इन का पूरा ध्यान रखोगी, साथ ही, अपना भी ध्यान रखोगी. अब आप की उम्र हो गई है, सो आप दोनों को आराम करना चाहिए. अब आप दोनों को किसी तरह की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है. अभी कुछ ही देर में दिशा और निशा यहां पर आ रही हैं. वे किचन संभाल लेंगी और घर का सारा काम भी वे दोनों कर लेंगी.''

अभी अतुल ने अपनी बात समाप्त भी नहीं की कि राम प्रसाद ने अपनी पत्नी सरला और दोनों बेटियों के साथ घर में प्रवेश किया.

राम प्रसाद भीतर आते ही कांता प्रसाद के पैर छूने के लिए आगे बढ़े तो कांता प्रसाद ने उन्हें अपने गले से लगा लिया. दोनों की आंखों से गंगाजमुना बहने लगी. एक लंबे अरसे से दोनों के मन में जमा सारा मैल पलभर में आंसुओं में बह गया.

दोनों भाइयों को वर्षों बाद गले मिलते देख परिवार के अन्य सदस्यों की आंखें भी पनीली हो गईं. निशा और दिशा सभी के लिए चायनाश्ता बनाने के लिए रसोई घर की ओर मुड़ गईं. बैठक में कुछ देर तक निस्तब्धता छाई रही जिसे अतुल ने भंग करते हुए कहा, ''ताऊजी, एक बात कहूं, कोरोना महामारी ने लोगों के बीच दूरियां जरूर बढ़ाई हैं पर हमारे लिए कोरोना लकी साबित हुआ है क्योंकि इस ने 2 परिवारों की दूरियां मिटाई हैं.'' यह कहते हुए वह जोर से हंसने लगा, अतुल की हंसी ने गमगीन माहौल को खुशनुमा बना दिया.

कांता प्रसाद और राम प्रसाद की नम आंखों में भी हंसी चमक उठी. कांता प्रसाद ने अतुल को इशारे से अपने करीब बुलाया और अपने पास बैठाते हुए कहा, ‘‘अतुल बेटा, एक बात ध्यान से सुनना, सरकारी अस्पताल के सामने मैं ने अपनी एक दुकान बनवारीलाल को किराए पर दे रखी है न, वह इस महीने की 30 तारीख को खाली कर रहा है. अब तुम इस दुकान में शिफ्ट हो जाना, आज से यह दुकान तुम्हारी है, समझे. मैं जल्दी ही वकील से यह दुकान तुम्हारे नाम करवाने के लिए बात कर लूंगा.’’

अतुल बीच में बोल पड़ा, ‘‘नहीं ताऊजी, मेरी अपनी दुकान अच्छी चल रही है. प्लीज, आप ऐसा न करें.’’

‘‘अरे अतुल, मुझे पता है, तेरी दुकान कितनी अच्छी चलती है, एक कोने में तेरी छोटी सी दुकान है और अस्पताल से बहुत दूर भी. बस, तू मेरी बात मान ले. अपने ताऊजी से बहस न कर,’’ कांता प्रसाद ने मुसकराते हुए अतुल को डांट दिया.

‘‘भाईसाहब, आप ऐसा न करें, दुकान भले ही चलाने के लिए हमें किराए पर दे दें पर इसे अतुल के नाम पर न करें, सुमित...’’

राम प्रसाद भविष्य का विचार करते हुए सुझाव देने लगे तो कांता प्रसाद किंचित आवेश में बीच में बोल पड़े, ‘‘अरे रामू, यह मेरी प्रौपर्टी है, मैं चाहे जिसे दे दूं. सुमित से अब हम कोई नाता नहीं रखना नहीं चाहते हैं. अब वह हमारा नहीं रहा. सुमित ने तो अपनी अलग दुनिया बसा ली है. उसे हम दोनों की कोई जरूरत नहीं है. अब तो अतुल ही हमारा बेटा है.’’

कांता प्रसाद की आंखें फिर छलक गईं. राम प्रसाद ने इस समय बात को और आगे बढ़ाना उचित न समझा.

कुछ ही देर में निशा और दिशा किचन से नाश्ता ले कर बाहर आ गईं. रमा ने निशा और दिशा को अपने पास बैठाया. दोनों रमा के दाएंबाएं बैठ गईं. रमा ने दोनों के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, ‘‘ये जुड़वां बहनें जब छोटी थीं तब दोनों छिपकली की तरह मुझ से चिपकी रहती थीं. रात को सरला बेचारी सो नहीं पाती थी. तब मैं एक को अपने पास सुलाती थी. इन का पालनपोषण करना सरला के लिए तार पर कसरत करने के समान था.

‘‘देखो, अब ये कितनी बड़ी हो गई हैं.’’ यह कहते हुए रमा निशा और दिशा का माथा चूमने लगी, फिर कांता प्रसाद की ओर मुखातिब होते हुए बोली, ‘‘आप ने बहुत बातें कर लीं जी, अब मेरी बात भी सुन लो. मैं ने निशा और दिशा का कन्यादान करने का निर्णय लिया है. इन दोनों के विवाह का संपूर्ण खर्च मैं करूंगी. अतुल इन्हें जितना पढ़ना है, पढ़ने देना और अगर तुम प्राइवेटली आगे पढ़ना चाहो तो पढ़ सकते हो. अब तुम्हें और तुम्हारे मम्मीपापा को निशादिशा की चिंता करने की जरूरत नहीं है.’’

‘‘रमा, तुम ने तो मेरे मुंह की बात छीन ली है. मैं भी यही कहने वाला था. हम तो बेटी के लिए तरस रहे थे. ये अपनी ही तो बेटियां हैं.’’

कांता प्रसाद ने उत्साहित होते हुए कहा तो उन का चेहरा खुशी से चमक उठा मगर उन की बातें सुन कर राम प्रसाद और मूकदर्शक बन कर बैठी सरला की आंखों से आंसुओं की धारा धीरेधीरे बहने लग गई.

माहौल फिर गंभीर बन रहा था, इस बार निशा ने माहौल को हलकाफुलका करते हुए कहा, ‘‘आप सब तो बस बातें करने में ही मशगूल हो गए हैं. चाय की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है. देखो, यह ठंडी हो गई है. मैं फिर से गरम कर के लाती हूं.’’ यह कहते हुए निशा उठी तो उस के साथसाथ दिशा भी खड़ी हो गई. दिशा ने सभी के सामने रखी नाश्ते की खाली प्लेटें उठाईं तो निशा ने ठंडी चाय से भरे कप उठाए. फिर दोनों किचन की ओर मुड़ गईं जिन्हें कांता प्रसाद और रमा अपनी नजरों से ओझल हो जाने तक डबडबाई आंखों से देखते रहे. ●

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

GROWMED®
AD VITAMIN
बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।
इसमें है Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

©: A-88094/2010
VITAMIN A, D, E AND OLIVE OIL
GROWMED®
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND VIGOUR OF BABIES
अब चंदन एवं गुलाब के खुशबू में भी

GROWMED®
PAIN RELIEF Gel & Tablet
आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

GROWMED PAIN RELIEF Gel
Diclofenac Diethylamine, Oleum Lini, Methyl Salicylate & Menthol Gel
15 gm

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

सोशल मीडिया में चल रहीं तमाम चर्चाओं व अफवाहों के बाद आखिकार कैटरीना कैफ और विक्की कौशल की रौयल वैडिंग हो गई.

कैटरीना और विक्की कौशल की रौयल वैडिंग

हिंदी सिनेमा की अभिनेत्री कैटरीना कैफ और अभिनेता विक्की कौशल 9 दिसंबर को राजस्थान के सवाईमाधोपुर स्थित सिक्स सैंसस बरवाड़ा फोर्ट में परिणय सूत्र में बंध गए. रौयल थीम में की गई शादी में कैटरीना डोली में और विक्की 7 घोड़ों के रथ पर सवार हो कर शादी के मंडप पहुंचे.

शांत, हंसमुख विक्की और कैट एकदूसरे को 2 साल से डेट कर रहे थे. लेकिन इस की भनक कभी नहीं लगी. कई बार मीडिया को इस की भनक लगी और इस की सचाई जानने की कोशिश करने पर भी दोनों ने इस राज को दबाए रखा, हंस कर टाल दिया. दोनों की नजदीकियां लौकडाउन के दौरान बढ़ीं. अब दोनों बौलीवुड के विवाहित कपल की श्रेणी में शामिल हो चुके हैं.

एक इंटरव्यू में विकी कौशल ने कहा था कि जब उन्हें कोई प्यार करने वाला सच्चा साथी मिलेगा, तभी वे डेट और शादी करेंगे. कैटरीना कैफ से भी उन की शादी के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने जोर से हंसते हुए कहा था, 'अभी मैं शादी तक सिंगल हूं और जब शादी करूंगी, सब को सूचित भी करूंगी, इसलिए प्रशंसकों को इंतजार करना पड़ेगा.'

बात सही थी, अब अभिनेत्री ने बहुत ही धूमधाम से शाही अंदाज में शादी की है. कैटरीना कैफ की शादी की आउटफिट्स फेमस सैलिब्रिटी डिजाइनर सब्यसाची ने तैयार किया है.

दोनों परिवारों के सदस्यों और करीबी दोस्तों के साथ मेहंदी और संगीत कार्यक्रम को खास बनाने के लिए नेहा कक्कड़, हार्डी संधू, रोहन प्रीत आदि भी शामिल हुए. इस शादी में 120 मेहमान शामिल हुए, जिन में अधिकतर सैलिब्रिटी रहे. सभी ने पतिपत्नी को दिल से आशीर्वाद दिया.

कैटरीना कैफ पारंपरिक उत्तर भारतीय दुलहन की तरह नजर आईं. उन्होंने अपनी शादी के लिए पिंक कलर का खूबसूरत लहंगा पहना था, जिस में शानदार एंब्रौयडरी की गई थी. इस के साथ कैटरीना कैफ के बालों में गजरा सजा हुआ था. उन्होंने लहंगे के साथ चूड़ा, नथ, मांग टीका समेत पूरे सोलह शृंगार के साथ विवाह किया.

कैटरीना कैफ और विक्की कौशल शादी के बाद दोनों फिल्मों के सैट पर वापस लौटेंगे. प्रोजैक्ट्स पूरे करने के बाद कैटरीना कैफ और विक्की कौशल हनीमून मनाने मालदीव गए. हनीमून के बाद अब वे फिर से अपनी प्रोफैशनल लाइफ में बिजी हो जाएंगे.

कैटरीना जहां हिंदी फिल्म जगत की पौपुलर ऐक्ट्रैस की श्रेणी में जानी जाती हैं, वहीं विक्की कौशल इंडस्ट्री के उभरते सितारे हैं. उन्होंने 'मसान', 'उरी' व 'शहीद उधम सिंह' जैसी फिल्मों से खुद को सिद्ध किया है.

—सोमा घोष ●

SELECTED
NO.1 BRAND
INDIA 2016
पेट सफा तो हर रोग दफा...
Divisa
www.divisastore.com
अगर
पेट सफा
खाओगे
बिल्कुल जोर नहीं लगाओगे
20% EXTRA
super effective
पेट सफा टेबलेट्स
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Natural Laxative TABLETS
24x7 Helpline: 91197 88088

अगर आप भी

कब्ज • गैस • एसिडिटी

जैसी परेशानियों से घिरे हुए है,
तो आज ही लीजिए,
आयुर्वेदिक पेट सफा ग्रेन्यूल्स
या टेबलेट। यह पहले दिन
से असर दिखाता है।

Dr. Juneja's

पेट सफा®

Natural Laxative Granules & Tablets

निक्की तंबोली की मदहोश अदाएं

निक्की तंबोली मौडल और अभिनेत्री हैं जिन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत तेलुगू फिल्म से की. 2020 में टैलीविजन रिएलिटी शो 'बिग बौस 14' में एक प्रतियोगी के रूप में प्रमुखता से उभरीं और चर्चा का विषय बनीं. वैसे निक्की अकसर अपने बिंदास कमैंट्स, अपने फैशन स्टाइल और इंस्टाग्राम पर अपनी बोल्ड तसवीरों के कारण सुर्खियों में रहती हैं.

निक्की हार्डकोर फिटनैस फ्रीक हैं. हाल ही में उन्होंने अपने सुडौल शरीर और टोंड एब्स को दिखाने के लिए कई तरह के पोज में अपने फौलोअर्स को मदहोश कर दिया.

निक्की तंबोली का अर्जुन कानूनगो के साथ म्यूजिक वीडियो 'दिल किसी से' 9 सितंबर, 2021 को प्रीमियर हुआ. रिलीज के दो हफ्तों में इसे 7.6 मिलियन व्यूज और 2 लाख 36 हजार लाइक्स मिल चुके हैं. ●

Styl

e OF THE MONTH

प्रेम समस्याएं

मेरी उम्र 24 वर्ष है. मैं आजकल डिप्रैशन के दौर से गुजर रहा हूं. मैं ने अपनी गर्लफ्रैंड को सच्चे दिल से चाहा था लेकिन उस ने मेरी फीलिंग्स की बिलकुल कद्र नहीं की. उस की जौब दूसरे शहर बेंगलुरु में लगी तो मेरी परवाह न करते हुए वहां चली गई. मैं ने यह भी सह लिया लेकिन एक महीने के अंदर वहां नया बौयफ्रैंड बना लिया और मुझ से ब्रेकअप कर लिया. मुझे लगता है उस ने मुझ से कभी प्यार किया ही नहीं था. अपनेआप पर गुस्सा आता है कि ऐसी लड़की को मैं ने क्यों चाहा, जिस के लिए मेरी हैसियत जीरो थी.

रातदिन उस के बारे में सोच कर दुखी रहता हूं. जानता हूं यह सब ठीक नहीं लेकिन क्या करूं. अपने को समझा नहीं पा रहा. बहुत डिप्रैस हो गया हूं. आप ही बताएं क्या करूं?

माई डियर फ्रैंड, सब से पहले तो आप को यकीन करना होगा कि उस ने आप से कभी प्यार किया ही नहीं. वह बेवफा थी. वह आप के बारे में सोचती तक नहीं, फिर आप क्यों उस के पीछे अपनी जिंदगी बरबाद कर रहे हैं. एक खूबसूरत जिंदगी आप के सामने है और आप हैं कि अपने कदम थाम कर बैठ गए हैं और दुख के सागर में गोते लगाने में लगे हैं.

हम अच्छी तरह समझ रहे हैं कि दुनिया आप को नीरस लगने लगी है, जिंदगी का उत्साह खत्म हो गया है लेकिन दर्द में ही रहेंगे तो खुद को ही प्रौब्लम देंगे. इस में उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा इसलिए आप को कुछ ऐसा करना है कि आप अपनी जिंदगी दोबारा से हंसीखुशी जी सकें.

सब से पहले तो सच को स्वीकार करते हुए एक नई एनर्जी के साथ अपने सपनों को पूरा करने में अपना वक्त बिताएं, जिस से आप का जीवन बेहतर बन सके और जिसे जान कर उस लड़की को ईर्ष्या हो कि आप को छोड़ कर उस ने बड़ी गलती की है.

हम इस बात से वाकिफ हैं कि आप का मन किसी से बात करने का नहीं करता होगा लेकिन अंदर ही अंदर न घुलें. कोई तो आप का ऐसा दोस्त होगा जिस से आप अपने दिल की बात शेयर कर सकते होंगे तो उस से अपने ब्रेकअप की बात करें, खुल कर उसे अपने ब्रेकअप के बारे में बताएं, आप को सुकून मिलेगा. किसी के सामने अपना गुबार निकालने से दिल हलका हो जाता है और दूसरे के सहानुभूति के शब्द आहत मन पर मरहम का काम करते हैं.

आप फ्री हैं और दोस्त लोग भी यदि फ्री हैं तो उन के साथ घूमेंफिरें. दोस्तों से मिलनेजुलने पर अच्छा लगेगा.

जितना भी हो सके उस लड़की से जुड़ी बातों को जल्दी भूलने की कोशिश करें. इसलिए उस से जुड़ी हर चीज जैसे फोटो, ग्रीटिंग्स को फाड़ कर नष्ट कर दें. इस के अलावा उस के कौंटैक्ट नंबर, ईमेल, मैसेज सबकुछ डिलीट कर दीजिए. सोशल मीडिया पर अनफौलो कर दें और किसी भी तरह के संपर्क में रहने से बचें.

अपने शरीर और दिमाग को कहीं व्यस्त रखें. इसलिए आप किसी नए काम करने में, दोस्तों के साथ डांस करना, मूवी देखना, पढ़ाई करना, घूमना आदि कार्य कर के अपनेआप को व्यस्त रखें. जितना कम आप सोचेंगे उतना ही उसे भूलना आसान होगा.

दुख में गलत आदतों का शिकार होने की गलती बिलकुल मत कीजिए. इस से उस धोखेबाज लड़की को कोई फर्क नहीं पड़ेगा, बल्कि आप ही अपनी सेहत के साथ खिलवाड़ करेंगे. इसलिए अपने दिमाग से नकारात्मक विचार निकाल दें और हमेशा सकारात्मक सोच रखें. पौजिटिव थिंकिंग रखने वाले कभी हारते नहीं हैं.

वैसे बहुत लोग हैं जिन्हें प्यार में धोखा मिला है. आप अकेले व्यक्ति नहीं हैं, इसलिए यह बहुत सामान्य बात है. वक्त के साथसाथ धीरेधीरे सब ठीक हो जाएगा. बस खुद पर भरोसा बनाए रखिए. जीवन के सफर में बहुत लोग मिलेंगे और यकीनन आप को कोई न कोई अपना लाइफ पार्टनर जल्दी ही मिल जाएगा, बस अपनी खोज जारी रखिए. हिम्मत न हारें.

मैं 26 साल का नौजवान हूं. एक दिन मेरे फेसबुक अकाउंट में एक महिला का फ्रैंड सजेशन आया. मैं ने उसे अपनी फ्रैंड रिक्वैस्ट भेज दी. कुछ दिनों बाद उस महिला ने मेरी फ्रैंड रिक्वैस्ट एक्सैप्ट कर ली, फिर धीरेधीरे हमारी हायहैलो होनी शुरू हो गई. मैं उस महिला की ओर जबदस्त आकर्षित होता जा रहा हूं जबकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि वह शादीशुदा है, 46 साल की है, 2 बच्चों की मां है.

उस के पति दूसरे शहर में पोस्टेड हैं और वह बच्चों के साथ अकेली रहती है और अपना बुटीक चलाती है. वह अब मुझे अपने घर बुला रही है. मैं उस से मिलने के लिए दीवाना हो रहा हूं लेकिन फिर भी दिल में कहीं न कहीं यह खयाल भी आ रहा है कि 'नहीं, यह सब ठीक नहीं होगा'. दिमाग बहुत ज्यादा खराब हो रहा है. अजीब कशमकश चल रही है. आप की राय शायद मुझे कोई सही राह दिखाए.

ओफ, शुक्र है आप ने अभी कोई गलत कदम नहीं उठाया. आप जिंदगी की सब से बड़ी गलती करने जा रहे हैं. आप क्या अपनी अच्छीखासी जिंदगी को पचड़ों में डाल कर बरबाद करना चाहते हैं? वह महिला शादीशुदा है, 2 बच्चों की मां है, आप से उम्र में 20 साल बड़ी है. उस के साथ इन्वौल्व हो कर आप क्या हासिल कर लेंगे.

न आप उस से शादी कर फैमिली बना सकते हैं, न उसे अपने परिवार वालों से मिलवा सकते हैं. आप यह कदम उठा कर किसी दूसरे की गृहस्थी में आग लगाएंगे. उस के पति को आप के बारे में पता चल जाएगा तो न जाने क्या हश्र होगा.

एक बार चलो माने लेते हैं कि वह महिला अपना अकेलापन दूर करने के लिए आप से दोस्ती करना चाहती है. आप दोनों फिजिकल रिलेशन रख कर एकदूसरे की कमी को पूरा करना चाहते हैं लेकिन फिर भी यह ठीक नहीं होगा.

आप के लिए तो बिलकुल भी नहीं क्योंकि अभी आप की उम्र पड़ी है एक नई शुरुआत करने की, एक हमउम्र साथी के साथ अपनी गृहस्थी बसाने की. उस महिला का तो कुछ नहीं जाएगा. आप से वह अपनी सैक्सुअल डिजायर पूरी कर लेगी लेकिन आप का क्या. उस का अपना परिवार है, बच्चे हैं, पति की समाज में प्रतिष्ठा है. लेकिन आप को इस महिला से संबंध रख कर क्या हासिल होगा, कुछ नहीं.

आप आकर्षण के जाल में फंस रहे हैं. मत फंसिए. कुछ हाथ नहीं आएगा. अपनी जिंदगी को गलत ट्रैक पर मत ले जाइए.

हमारी राय मानिए उस महिला से कौंटैक्ट रखना बंद कर दीजिए. मीडिया की हर साइड से उसे ब्लौक कर दें. अननौन नंबर से फोन आए तो बिलकुल कौल न उठाएं. हो सकता है वह दूसरे नंबर से आप को कौंटैक्ट करने की कोशिश करे. थोड़े दिन आप बेचैन रहेंगे लेकिन धीरेधीरे आप समझ जाएंगे कि आप ने जो किया अच्छा किया. लाइफ जब अच्छीखासी सीधी चल रही है तो उसे पचड़ों में क्यों उलझाया जाए. ●

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रैस भवन, **ई–8**, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली–110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO. 1 BRAND INDIA 2014
Consumer Survey Report, MRG 2014

ज्योतिष्मती तेल ①
जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल ②
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल ③
नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल ④
जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल ⑤
पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल ⑥
विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल ⑦
जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल ⑧
मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

NO. 1 BRAND
Helpful in Painful Conditions
Dr. Ortho™ Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

वैब सीरीज रिव्यू

क्या देखें

डीकपल्ड

क्रिएटर–मनु जोसेफ
स्टारकास्ट–आर माधवन, सुरवीन चावला, सोनिया राठी, दिलनाज ईरानी व अन्य.
प्लेटफौर्म–नैटफ्लिक्स
जौनर–कौमेडी ड्रामा.

डीकपल्ड पूरी तरह से मैट्रो और इंग्लिश कल्चर की सीरीज है. इसे बनाया ही इंग्लिश में गया है. हालांकि, हिंदी दर्शकों के लिए इस सीरीज को हिंदी में डब किया गया है. यह ऐसे पतिपत्नी की कहानी है जो दिल्ली एनसीआर में रहते हैं और तलाक लेने का मन बना चुके हैं.

फिल्म में आर माधवन और सुरवीन चावला हैं जिन्होंने ऐसे पतिपत्नी का किरदार निभाया है जो तलाक लेना चाह रहे हैं. आर्या (आर माधवन) एक लेखक है जिस की राइटिंग को चेतन भगत के बाद दूसरे नंबर पर सब से ज्यादा पढ़ा जाता है, जबकि उस की पत्नी श्रुति (सुरवीन चावला) वैंचर कैपिटलिस्ट है. ये दोनों ही अपनेअपने पेशे में कामयाब हैं लेकिन अपनी निजी जिंदगी में अपने रिश्ते को संभाल पाने में नाकामयाब.

जहां एक तरफ श्रुति का किरदार सुलझा हुआ है और वह बहुत कौंफिडैंट है वहीं आर्या हर चीज में क्रिटिकल है. अधेड़ हो चुके आर्या की आदतें किसी न किसी चीज में गलतियां निकालने की हैं. उसे किसी का बीच में टोकना नहीं पसंद, टीनएज बच्चों से हाथ मिलाना नहीं पसंद. वह हर बात में कमियां निकालता है. हर मामले पर बिना किसी की परवा किए अपनी राय रखता है.

नतीजा यह कि ज्यादातर लोग उसे नापसंद करते हैं. श्रुति को भी लगता है कि आगे उस के साथ जीवन नहीं बिताया जा सकता. अब समस्या सिर्फ इतनी है कि दोनों की एक बच्ची है, रोहिणी. आर्या और श्रुति नहीं चाहते कि उन के तलाक का रोहिणी पर बुरा असर हो. सो वे तय करते हैं कि तलाक के बाद भी एकदूसरे का खयाल रखेंगे, एक छत के नीचे रहेंगे और मिलजुल कर बेटी की परवरिश करेंगे. अगर वे ऐसा करते हैं तो फिर शादी में और क्या होता है?

सीरीज ऐसी है जैसे इंडियन ड्रामा को विदेशी स्टाइल में पिरो दिया हो. जहां काम बिगड़ा है, वह हिस्सा डबिंग है. बेहतर होता सभी कलाकारों की ओरिजिनल आवाज के साथ सीरीज चलती. बाकी सीरीज बढ़िया है, देखने लायक है.

आर्या (सीजन 2)

क्रिएटर–राम माधवानी, संदीप मोदी, विनोद रावत
स्टारकास्ट–सुष्मिता सेन, सिकंदर खेर, अनुपम भाटिया, मनीष चौधरी व अन्य.
प्लेटफौर्म–डिज्नी हौटस्टार
जौनर–ऐक्शन थ्रिल ड्रामा.

इस सीरीज का यह सीजन ठीक वहीं से शुरू होता है जहां पर सीजन एक खत्म हुआ था. आर्या अपनी फैमिली को सुरक्षित रखने के लिए विदेश तो चली जाती है लेकिन अतीत उस का पीछा नहीं छोड़ता. उसे वापस भारत अपने पिता और भाई के खिलाफ गवाही देने के लिए बुला लिया जाता है.

पुलिस आर्या को विटनैस प्रोटैक्शन के तहत भारत ले कर आती है और सुरक्षा देने का वादा करती है पर आर्या कोर्ट में अपने बयान से मुकर जाती है. इस की वजह से पुलिस कमिश्नर उस की मदद करने से मना कर देता है. वहीं रशियन माफिया भी आर्या के पीछे होता है क्योंकि उसे लगता है आर्या को 300 करोड़ के ड्रग्स की चोरी के बारे में जानकारी है और वह छिपा रही है.

पिछले सीजन में जिन चीजों से बच कर आर्या विदेश चली गई थी, वही चीजें फिर से मुड़ कर उसे जकड़ने लगती हैं. ऐसे में वह अपने परिवार से कैसे लड़ेगी और अपने तीनों बच्चों को कैसे बचाएगी, यहीं से कहानी में मोड़ आता है.

सीरीज में सस्पैंस बरकरार है. पिछला सीजन सुष्मिता सेन की अच्छी ऐक्टिंग और स्टोरी के चलते चल पड़ा था. इस बार भी वह अपना रिदम बना कर रखती है. इस सीजन में आर्या धीरेधीरे सारी कमान अपने हाथ में लेने का फैसला करती है. सुष्मिता ने इस सीजन में दमदार ऐक्टिंग की है. उस ने अपने किरदार की कमजोरी व मजबूती को बखूबी परदे पर उतारा है. कहानी जैसेजैसे आगे बढ़ती है, लोगों को बहुत सारा ट्विस्ट देखने को मिलता है.

सीरीज का प्लौट अच्छा है, दर्शकों को बांधे रखता है, देखने लायक बन पड़ी है.

इल्लीगल (सीजन 2)

क्रिएटर–अश्विनी चौधरी
स्टारकास्ट–नेहा शर्मा, अक्षय ओबराय, पीयूष मिश्रा, सत्यदीप मिश्रा व अन्य.
प्लेटफौम–वूट
जौनर–कोर्टरूम ड्रामा.

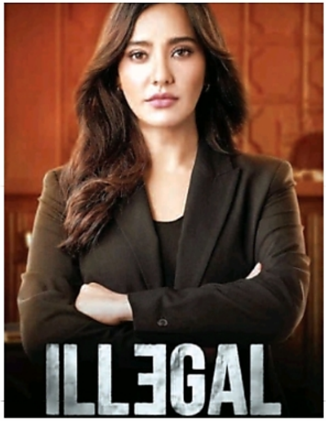

कानून की लड़ाई जितनी कोर्ट के भीतर लड़ी जाती है, उतनी ही कोर्ट के बाहर भी लड़ी जाती है. मोटामोटी यह सीरीज कोर्ट के अंदर और बाहर की तिकड़मों को सीरीज में दिखाती है. बहुत से लोगों को कोर्टरूम ड्रामा देखना पसंद होता है तो उन्हें यह सीरीज पसंद आएगी. इस का पहला सीजन हिट हुआ था क्योंकि सचझूठ की लड़ाई के बीच कानून के दांवपेंच यह सीरीज दिखाती है.

यह सीजन पहले सीजन से आगे की तरफ बढ़ता है. निहारिका (नेहा शर्मा), जो लीड किरदार है, ने साथी वकील पुनीत टंडन (सत्यदीप मिश्रा) के साथ मिल कर नई फर्म शुरू की है. उधर, जनार्दन जेटली (पीयूष मिश्रा) की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा पंख पसार रही है और वह दिल्ली की सत्ताधारी पार्टी में एंट्री लेने के बाद अपने प्रभाव से मुख्यमंत्री पद का दावेदार बन जाता है.

कहानी में 3 ऐसे मामले आते हैं जिन में निहारिका और जनार्दन जेटली की फर्म आमनेसामने होती है. 2 मुकदमों में जीत के साथ निहारिका की लोकप्रियता बढ़ती है और तीसरे मुकदमे को लड़ने के लिए खुद जनार्दन जेटली को राजनीति को थोड़ा हाशिए पर कर अदालत के मैदान में उतरना पड़ता है.

क्या निहारिका जीत पाएगी अपने उस्ताद से? क्या जनार्दन जेटली बन पाएगा दिल्ली का मुख्यमंत्री? कई चीजें हैं जो इस सीजन का रोमांच बनाती है. कोर्टरूम ड्रामा के तौर पर वर्ल्डवाइड सब से अधिक पसंद की जाने वाली सीरीज 'बेटर कौल सोल' नाम से है. इस सीरीज में भी कोर्ट के अंदरबाहर के दांवपेंच दिखाए गए. यह सीरीज भी उसी जौनर की है.

निर्देशक अश्विनी चौधरी ने कोशिश की है कि ट्विस्ट और सस्पैंस को इस में डाल दे. यह सीजन भी पहले सीजन की तरह रोचक है, स्क्रिप्ट में कसावट है और कहानी पर नियंत्रण है. जिस ने पहली सीरीज देखी उसे यह अच्छी लगेगी. नए व्यूअर्स को किरदारों से जुड़ने के लिए पहले सीजन से शुरुआत करनी पड़ेगी. –रोहित ●

बातचीत • शांतिस्वरूप त्रिपाठी

आशीष गोखले उन चुनिंदा अभिनेताओं में से हैं जिन्होंने डाक्टरी पेशे से अभिनय पेशे में कदम रखा है. थिएटर और टीवी सीरियलों में अभिनय करने के बाद आशीष फिल्मों और वैब सीरीज में आए. अब वे ‘420 आईपीसी’ में नजर आ रहे हैं.

“एक डाक्टर और एक सीबीआई अफसर के अनुशासन में काफी अंतर है”

–डा. आशीष गोखले

कोरोना महामारी ने हर इंसान को बहुतकुछ सिखाया. इस महामारी के दौरान बहुतों ने अपने प्रियजन खोए. जबकि कोविड–19 के दौरान तमाम डाक्टर मरीजों की जिंदगी बचाने के लिए दिनरात काम करते रहे. ऐसे ही डाक्टरों में से एक डा. आशीष गोखले भी कोविड के दौरान मुंबई के एक निजी अस्पताल में आईसीयू और आईसीसीयू में चौबीसों घंटे कार्यरत रह कर लोगों की जिंदगी बचाने के साथ ही लौकडाउन के चलते परेशान 250 डेलीवेजेस वर्करों को स्वयं हर दिन मुफ्त में खाना भी खिलाते रहे.

कोविड के दौरान डा. आशीष गोखले को कोरोना पीड़ितों का इलाज करते हुए देख कर काफी लोग आश्चर्यचकित भी हो रहे थे क्योंकि डाक्टर के रूप में प्रैक्टिस करने के साथसाथ वे पिछले 6–7 वर्षों से अभिनय के क्षेत्र में सक्रिय हैं. लोग उन्हें हिंदी सीरियल ‘कुमकुम भाग्य’ व मराठी सीरियल ‘मोगरा फुलेला’ सहित कई सीरियलों व फिल्मों में बतौर अभिनेता देख चुके हैं.

अब आशीष गोखले एक बार फिर अभिनय के क्षेत्र में काफी सक्रिय हो गए हैं. फिलहाल वे 16 दिसंबर से ‘जी 5’ पर स्ट्रीम होने वाली वैब सीरीज ‘420 आईपीसी’ को ले कर सुर्खियों में हैं जिस में उन्होंने मुख्य सीबीआई अफसर का किरदार निभाया है.

प्रस्तुत हैं डा. आशीष गोखले से हुई एक्सक्लूसिव बातचीत के अंश :

आप तो डाक्टरी पेशे से जुड़े हुए हैं, फिर यह अभिनय का चस्का कब लग गया?

डाक्टरी पेशा तो मेरी रगों में बसा हुआ है. मैं महाराष्ट्र के कोंकण इलाके के वेलनेश्वर, रत्नागिरी का रहने वाला हूं. मेरे परिवार में सभी डाक्टर हैं. मेरे पिता डा. ध्रुव गोखले, मां उषा गोखले व छोटी बहन भी डाक्टर है. मेरे मातापिता का वेलनेश्वर में ही ‘आशीष अस्पताल’ नामक अस्पताल है.

मैं ने पुणे से डाक्टरी की पढ़ाई पूरी की. फिर मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए मुंबई आ गया और मुंबई के मल्टीपल स्पैशलिटी अस्पताल में आईसीयू और आईसीसीयू में इमरजैंसी फिजीशियन डाक्टर के रूप में कार्यरत हूं. मगर मुझे बचपन से ही अभिनय का शौक रहा है. मैं ने स्कूल के दिनों से ही थिएटर करना शुरू कर दिया था.

जब बचपन से अभिनय का शौक था तो फिर डाक्टरी की पढ़ाई?

जैसा कि मैं ने पहले ही बताया कि मेरे मातापिता डाक्टर हैं और उन का अपना अस्पताल भी है इसलिए उन का दबाव रहा. मातापिता ने मुझे एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी करने के लिए कहा. मैं ने पुणे के मैडिकल कालेज से एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की.

डाक्टरी की पढ़ाई पूरी होने के बाद मैं ने डाक्टर के रूप में प्रैक्टिस करना शुरू किया था. लेकिन अभिनय का कीड़ा अंदर से हिलोरें मार रहा था. इसलिए मैं ने अपने पिता से मुंबई जाने की इजाजत मांगी. इस पर वे कुछ नाराज हुए और कहा कि, ‘यदि मुंबई जाओगे तो आर्थिक मदद की उम्मीद मत करना. मैं तुझे एक फूटी कौड़ी नहीं दूंगा. तुझे अपने बलबूते पर संघर्ष करना पड़ेगा.’

उस वक्त मैं ने डाक्टरी की पढ़ाई पूरी

कर के प्रैक्टिस शुरू ही की थी. इसलिए मेरे पास आर्थिक बचत नहीं थी पर मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए मुंबई आ गया. मैं मुंबई के जुहू स्थित एक निजी अस्पताल में रात में बतौर डाक्टर काम करने लगा और दिन में अभिनय के लिए संघर्ष करना शुरू किया. मेरी मेहनत रंग लाई.

2015 –2016 में मुझे 'प्यार को हो जाने दो' तथा 'कुमकुम भाग्य' सीरियलों में अभिनय करने का अवसर मिला. 'कुमकुम भाग्य' में कैमियो किया था. 2016 में फिल्म 'गब्बर इज बैक' में छोटा सा किरदार निभाया. इस फिल्म के सैट पर कई लोगों से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई. मुझे फिल्मी दुनिया की कार्यशैली, औडिशन देने के बारे में विस्तृत जानकारी मिली.

2017 में फिल्म 'लव यू फैमिली' की जिस में मैं ने मनोज जोशी के बेटे का किरदार निभाया था. इस के बाद मैं ने भारत का पहला ड्रामा रिऐलिटी शो 'तारा फ्रौम सितारा' किया. इस में मेरा वरुण माने का किरदार काफी लोकप्रिय हुआ. इस के अलावा 'भौकाल' व 'साइड हीरो' जैसी वैब सीरीज कीं. 'मोगरा फुलेला', 'कंडीशंस अप्लाय', 'रेडी मिक्स', 'बाला' सहित कुछ मराठी फिल्में कीं. अब मैं ने वैब सीरीज '420 आईपीसी' की है.

• थिएटर पर क्याक्या किया?

थिएटर काफी किया है. मैं ने मराठी, हिंदी व उर्दू भाषा के नाटकों में अभिनय किया है. मैं ने 20 वर्ष की उम्र में 'स्वामी विवेकानंद' नामक नाटक में यंग उम्र के स्वामी विवेकानंद का किरदार निभाया. मैं ने उस में उन के संन्यासी बनने से पहले का किरदार निभाया. कन्याकुमारी, कानपुर, दिल्ली, अहमदाबाद सहित कई शहरों में इस के शो किए. उस वक्त मैं इस नाटक के शो करते हुए डाक्टरी की पढ़ाई भी कर रहा था. उन दिनों मैं फैशन शो में मौडलिंग करता था. कई प्रोडक्ट्स के लिए रैंपवाक भी किया. इस के चलते कालेज दिनों में मैं पुणे में काफी मशहूर था.

2 हिंदी, 3 मराठी और एक उर्दू नाटक में अभिनय किया. हर नाटक के काफी शो हुए. मैं ने खुद भी एक नाटक का लेखन व निर्देशन और उस में अभिनय किया. मैं ने कुछेक पात्रीय नाटक भी किए. मराठी नाटक 'नाते जुड़ा दे मणाषी मणाषी' काफी लोकप्रिय रहा. एक पात्रीय नाटक 'बैक टू स्कूल' भी लोकप्रिय हुआ. ये सारे नाटक 2007 से 2011 के बीच ज्यादा किए.

• आप की मातृभाषा तो मराठी है?

जी हां, लेकिन मैं ने पंजाबी, हिंदी व उर्दू भाषाएं लिखना व पढ़ना सीखा. मैं ने पुणे के कैंट इलाके के गुरुद्वारा में जा कर सरदारजी से पंजाबी भाषा सीखी. इसलिए मेरी हिंदी में आप को मराठी एक्सैंट नहीं मिलेगा. मैं शुद्ध हिंदी व उर्दू में बात कर सकता हूं.

• वैब सीरीज '420 आईपीसी' से जुड़ना कैसे हुआ?

एक अभिनेता के तौर पर संघर्ष करते हुए मैं ने कई प्रोडक्शन हाउस में अपनी तसवीरें भेज रखी हैं. वैब सीरीज '420 आईपीसी' के प्रोडक्शन हाउस में भी तसवीरें भेज रखी थीं. कोविड के वक्त मैं बहुत व्यस्त था. दिन में 500 फोन आते थे. मैं ने कई मरीजों का मुफ्त में इलाज किया.

खैर, सितंबर 2020 में प्रोडक्शन हाउस से मेरे पास औडिशन कर के वीडियो भेजने का फोन आया. उस वक्त मैं अस्पताल में था. मैं ने कह दिया कि मैं रात में भेज पाऊंगा. देररात मैं ने औडीशन भेजा और मेरा चयन हो गया.

• वैब सीरीज '420 आईपीसी' में आप का किरदार क्या है?

मैं ने इस में मुख्य सीबीआई औफिसर मिस्टर अचलेकर का किरदार निभाया है जोकि एक बहुत बड़े घोटाले में शामिल मिस्टर केसवानी को गिरफ्तार करता है. केसवानी को सजा देने के बाद रिहा किया जाता है. उस के बाद कोर्ट केस चलता है.

• सीबीआई अफसर का किरदार निभाने के लिए किस तरह की तैयारी की?

निर्देशक मनीष गुप्ता ने मुझ से कहा कि मुझे सीबीआई औफिसर के लिए अपनी बौडी लैंग्वेज को बदलना पड़ेगा. मुझे उन का उठनाबैठना, चलनाफिरना वगैरह सबकुछ सीखना पड़ेगा. अब यह मेरे लिए बड़ी चुनौती थी क्योंकि सीबीआई औफिसर आसानी से मिलते नहीं हैं. ये लोग तो बताते भी नहीं हैं कि वे सीबीआई औफिसर हैं.

पुलिस अफसर तो हमारे आसपास नजर आते हैं इसलिए हम इन के बारे में सबकुछ आसानी से नहीं जान सकते हैं. सीबीआई औफिसर मीडिया में भी नहीं आते तो यह जानना बहुत मुश्किल था कि उन की बौडी लैंग्वेज कैसी होती है, वे किसी परिस्थिति में किस तरह से रिऐक्ट करते हैं.

इस वैब सीरीज के सीबीआई औफिसर के किरदार में ऐक्शन व रिऐक्शन काफी है. कोविड का वक्त था इसलिए किसी सीबीआई औफिसर से मिलने नहीं जा पाया. मगर मैं कुछ पुलिस अफसरों को जानता हूं तो उन की मदद से एकदो सीबीआई औफिसर के फोन नंबर ले कर उन से फोन पर बात कर सारी चीजें समझीं.

बौडी लैंग्वेज बदलने के लिए मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी. मैं अस्पताल में भी उसी तरह से रहने का प्रयास करता तो मेरे सहकर्मी डाक्टरों ने सवाल भी किया कि डा. आशीष, आप के अंदर कुछ बदलाव आ गया है. मेरे चलने का ढंग बदल चुका था. अब मैं गंभीर रहने लगा था. पहले मैं बहुत हंसहंस कर बात करता था पर अब चुप रहने लगा था.

वास्तव में मैं हमेशा चाहता हूं कि मैं जिस किरदार को निभाऊं, उस में पूरी तरह घुस कर उसे न्यायसंगत तरीके से परदे पर साकार करूं. इसलिए मैं अपने हर निर्देशक से किरदार के संबंध में कई सवाल करता हूं. मैं हमेशा हर किरदार को कैमरे के सामने पूरी शिद्दत के साथ जीता हूं.

• डाक्टर अनुशासित होते हैं और सीबीआई औफिसर भी. इस बात ने आप को सीबीआई औफिसर का किरदार निभाने में कितनी मदद की?

देखिए, दोनों अनुशासन के साथ अपने काम को अंजाम देते हैं. मगर दोनों में बड़ा विरोधाभास यह है कि एक सीबीआई औफिसर अपराधी के आत्मविश्वास को डिगा कर उस से सच उगलवाता है, जबकि एक डाक्टर अपने मरीज के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए आवश्यक बातें करता है. जब मरीज का आत्मविश्वास बढ़ता है, तभी वह जल्दी ठीक होता है.

सीबीआई औफिसर की तरह डाक्टर गंभीर नहीं रहता. वह मरीज की बीमारी की रिपोर्ट देख कर भी चेहरे पर भाव नहीं आने देता. बल्कि यही कहता है कि कोई गंभीर बात नहीं है. डाक्टर अपने मरीज को हंसाता है. उस का आत्मविश्वास बढ़ाता है. बीमारी की गंभीरता को महसूस करते हुए डाक्टर इस बात को अपने चेहरे के हावभाव से जाहिर नहीं होने देता.

• इस के अलावा कुछ नया कर रहे हैं?

एक फिल्म की शूटिंग हैदराबाद में कर रहा हूं. एमेजौन के लिए वैब सीरीज की है पर इन के संबंध में अभी ज्यादा नहीं बता सकता. ●

अब दूसरी फिल्म भी बनाएंगी चित्रांगदा

'हजारों ख्वाहिशें ऐसी', 'देसी बौयज', 'यह साली जिंदगी' और 'बाजार' जैसी फिल्मों की चर्चित अदाकारा चित्रांगदा सिंह ने 2018 में फिल्म 'सूरमा' का निर्माण किया था. अब वे दूसरी फिल्म बनाने की तैयारी कर रही हैं. उन का दावा है कि वे बहुत ज्यादा चूजी हैं. हमेशा अच्छी कहानी व अच्छे किरदार चुनती हैं.

वे कहती हैं, ''मैं ने अभिनय को अलविदा नहीं कहा है. मैं मनपसंद किरदार ही निभाती हूं तो वहीं फिल्म निर्माण में उतरने की वजह यह रही कि मैं उन कलाकारों में से नहीं हूं जो सैट पर कैमरे के सामने अभिनय करने के बाद सीधे अपनी वैनिटी वैन में जा कर बैठ जाए. मैं तो फिल्म निर्माण के हर विभाग में रुचि रखती हूं. इसी के चलते मैं ने 'सूरमा' का निर्माण किया और अब दूसरी फिल्म बनाने की तैयारी कर रही हूं. फिल्म निर्माण में समय लगता है. शूटिंग शुरू होने से 2 वर्ष पहले से उस पर तैयारी करनी पड़ती है. अच्छी कहानी का चयन करने के बाद पूरी टीम का चयन करना होता है.''

निकिता रावल पुलिस अफसर के किरदार में

'मि. हौट एंड मि. कूल', 'ब्लैक एंड व्हाइट', 'द हीरो' और 'अम्मा की बोली' जैसी फिल्मों में अभिनय कर शोहरत बटोर चुकी अभिनेत्री निकिता रावल रुकना नहीं जानतीं. इन दिनों वे अपनी नई वैब सीरीज फिल्म को ले कर चर्चा में हैं जिस में वे एक पुलिस अफसर का किरदार निभा रही हैं. निकिता रावल ने इस फिल्म के लिए पहनी अपनी पुलिस पोशाक वाली तसवीरें वायरल कर दी हैं. वे पुलिस अवतार में ऐक्शन मोड में हैं.

यों तो निकिता रावल हमेशा से तरहतरह के किरदारों को निभाना चाहती थीं मगर पुलिस अफसर के किरदार को निभाने के संदर्भ में निकिता रावल कहती हैं, ''मैं ने कुछ खूबसूरत फिल्में देखी थीं जिन में महिला अभिनेत्रियां पुलिस की भूमिका निभाती हैं. मसलन, हेमा मालिनीजी ने ऐसा बहुत पहले किया था. फिर रानी मुखर्जी ने फिल्म 'मर्दानी' के दोनों भागों में पुलिस अफसर की भूमिका निभाई. इन्हें देख कर मेरे अंदर भी एक पुलिस वाली की भूमिका निभाने का जोश जागा.''

वे आगे कहती हैं, ''जब मैं ने पुलिस अफसर की पोशाक पहनी और लुक धारण किया तो मुझे बहुत अच्छा लगा. यह लुक अद्भुत है, इसलिए इन तसवीरों को वायरल करने से मैं खुद को रोक न पाई.''

फिल्म 'जुगजुग जियो' की रिलीज डेट...

सफलतम फिल्म 'गुड न्यूज' के बाद अब निर्देशक राज मेहता अपनी नई पारिवारिक व मनोरंजक फिल्म 'जुगजुग जियो' को ले कर उत्साहित हैं, जिस में कई दिग्गज कलाकारों का समावेश है. अनिल कपूर, वरुण धवन, कियारा अडवाणी और नीतू कपूर जैसे दिग्गज कलाकारों के अभिनय से सजी फिल्म 'जुगजुग जियो' 24 जून, 2022 को सिनेमाघरों में पहुंचेगी. इस की कहानी को ले कर काफी गोपनीयता बरती जा रही है. इस फिल्म का निर्माण वायकौम 18 स्टूडियोज और धर्मा प्रोडक्शंस कर रहा है.

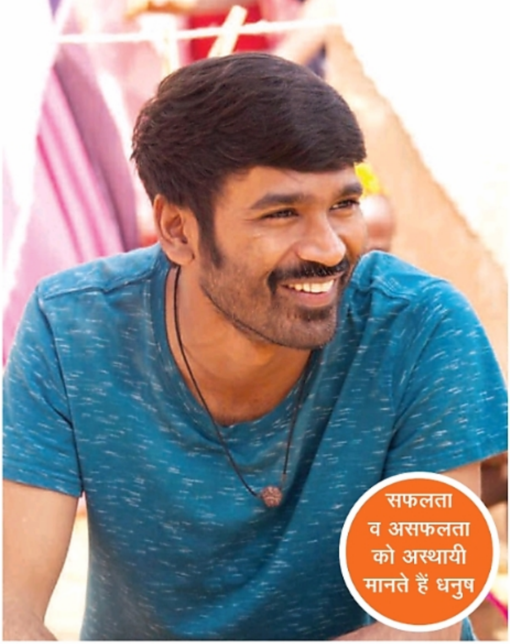

सफलता व असफलता को अस्थायी मानते हैं धनुष

दक्षिण भारत के मशहूर लेखक, गीतकार, गायक, निर्माता, निर्देशक व अभिनेता धनुष ने 2013 में आनंद एल राय की फिल्म 'रांझणा' से बौलीवुड में कदम रखा था. उस के बाद वे बौलीवुड में कई फिल्में करने वाले थे लेकिन अमिताभ बच्चन के साथ 2015 में आई फिल्म 'शमिताभ' की असफलता के बाद वे दक्षिण भारत में ही व्यस्त हो कर रह गए थे. अब पूरे 6 वर्षों बाद एक बार फिर निर्देशक आनंद एल राय की फिल्म 'अतरंगी रे' से बौलीवुड में वापसी की है, जिस में उन के साथ अक्षय कुमार भी हैं.

कहा जाता रहा है कि बौलीवुड में असफल होने के बाद धनुष का बौलीवुड से मोहभंग हो गया था, मगर खुद धनुष ऐसा नहीं मानते. वे कहते हैं, ''सफलता, असफलता दोनों अस्थिर हैं. हम लगातार सफल फिल्में नहीं दे सकते. यह सारा मसला सही समय पर सही पटकथा, निर्देशक आदि के मिलने व सही समय पर फिल्म के प्रदर्शन का है. 'शमिताभ' के बाद मुझे दक्षिण भारत में बेहतरीन विषयवस्तु वाली फिल्मों में चुनौतीपूर्ण किरदार निभाने के मौके मिलते रहे थे तो मैं वहां व्यस्त रहा. जैसे ही हिंदी फिल्मों के निर्देशक आनंद एल राय ने एक बेहतरीन किरदार के लिए मुझे याद किया, मैं ने 'अतरंगी रे' कर ली.''

राखी और रितेश की शादी का राज

पिछले कुछ वर्षों से अभिनेत्री राखी सावंत दावा करती आई हैं कि रितेश कुमार सिंह उन के पति हैं. दोनों पतिपत्नी की हैसियत से ही हर जगह घूम रहे थे और इसी रूप में दोनों 'बिग बौस' का हिस्सा बने. बिग बौस के अंदर की तसवीरें वायरल होते ही रितेश कुमार सिंह की अभी भी कानूनन पत्नी का हक रखने वाली स्निग्धा प्रिया ने रितेश व अपने बच्चे के साथ फोटो जारी कर दावा किया कि रितेश, राखी सावंत के पति नहीं हैं, बल्कि उन के पति हैं, जिन के खिलाफ स्निग्धा प्रिया ने अदालत में घरेलू हिंसा व तलाक का मुकदमा दायर कर रखा है. अभी तक उन का तलाक नहीं हुआ है. स्निग्धा के इस दावे के बाद हंगामा मच गया. अभी भी बिग बौस के घर के अंदर होने के कारण राखी सावंत का सामना मीडिया से नहीं पड़ा.

मगर रितेश कुमार 'बिग बौस' से बाहर आ चुके हैं. अब रितेश कुमार ने स्वीकार किया है कि अभी तक स्निग्धा से उन का तलाक नहीं हुआ है व उन्होंने राखी सावंत के साथ अदालत में या किसी रीतिरिवाज से शादी नहीं की है. उन्होंने राखी सावंत के साथ पतिपत्नी की तरह रहना शुरू कर दिया है. रितेश कहते हैं, ''मेरा मन का रिश्ता राखी के साथ है. राखी मुझे पति मानती है और मैं उस को पत्नी मानता हूं.'' अब देखना है कि 'बिग बौस' के घर से बाहर आने पर राखी सावंत क्या कदम उठाती हैं.

'बड़े अच्छे लगते हैं' व 'कुबूल है' सीरियलों में अभिनय कर चुकी अभिनेत्री चाहत खन्ना का रोहन गंडोत्रा के साथ जोड़ी बना कर तैयार किया गया संगीत वीडियो 'रुला रहे हो' वायरल हो चुका है. इस गीत को डीप मनी ने स्वरबद्ध करने के साथ ही संगीत से भी संवारा है. इस के वीडियो को राहत काजमी ने निर्देशित किया है. यह एक ऐसा ट्रैक है जो लोगों को उदासीन बनाता है. इसे कुछ खूबसूरत लोकेशंस पर फिल्माया गया है. इस म्यूजिक वीडियो की सब से बड़ी खूबी यह है कि इस में अदाकारा चाहत बहुत खूबसूरत लग रही हैं.

यों तो इस गाने के टीजर को भी काफी सराहना मिली थी. वीडियो में चाहत और रोहन की नई जोड़ी ताजी हवा के झोंके का एहसास दिलाती है.

इस संदर्भ में चाहत कहती हैं, ''मैं ने गाना सुना और यह सही लगा. मैं ने इसे करने के लिए तत्काल हामी भर दी थी. डीप मनी के नाम पर कुछ प्यारे ट्रैक हैं, इसलिए इसे हां कहना ठीक रहा. अब मेरा फोन बजना बंद नहीं हो रहा. मैं आज के समय को एंजौय कर रही हूं. लोग वास्तव में इसे पसंद कर रहे हैं. मैं जो करती हूं उसे करने के लिए मैं खुद को खुशनसीब मानती हूं.''

'रुला रहे हो' गाने में चाहत और रोहन की जोड़ी

जूनियर एनटीआर की पहली हिंदी डबिंग फिल्म 'आरआरआर'

एनटीआर जूनियर ने एस एस राजामोली की फिल्म 'आरआरआर' के लिए अपनी आवाज में हिंदी, तेलुगू, तमिल और कन्नड़ सहित 4 भाषाओं में डब किया. राजामोली द्वारा निर्देशित यह फिल्म सुपरस्टार एनटीआर जूनियर की पहली बहुभाषी भारतीय फिल्म है. इतना ही नहीं, इस में पहली बार एनटीआर जूनियर ने स्वयं हिंदी, कन्नड़ और तमिल में डब किया है.

दुनियाभर में स्टारडम हासिल करने वाले अभिनेता एनटीआर जूनियर ने अपने उच्चारण, स्वर और आवाज के मौड्यूलेशन को सही तरह से पकड़ने का हर संभव प्रयास किया ताकि उन की बोलचाल की बोली 3 भाषाओं (तमिल, कन्नड़ और हिंदी) में अपरिचित न लगे. इस फिल्म में उन के साथ रामचरण, अजय देवगन और आलिया भट्ट जैसे फिल्म जगत के बड़े सितारे दिखाई देंगे.

वास्तव में फिल्मकार एस एस राजामोली चाहते थे कि एनटीआर जूनियर इस फिल्म को सभी 4 भाषाओं में स्वयं डब करें और इस चुनौती को उन्होंने स्वीकार कर लिया. अपने दमदार अभिनय के लिए मशहूर अभिनेता एनटीआर जूनियर ने अपने निभाए हुए किरदार को हर भाषा में अपनी आवाज दी. इस से यह बात सामने आई कि एनटीआर जूनियर को तमिल, कन्नड़ और हिंदी की समझ है.

वैसे, कुछ समय पहले एनटीआर जूनियर ने 'आरआरआर' के ट्रेलर लौंच के अवसर पर अपनी त्रुटिहीन हिंदी में बात कर पूरी मीडिया को अपना बना लिया था.

फिल्म 'आरआरआर' के ट्रेलर में अपने सराहनीय अभिनय कौशल से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाले अभिनेता एनटीआर जूनियर ने इस में एक स्वतंत्रता सेनानी और गोंड जनजाति के रक्षक कोमाराम भीम की भूमिका निभाई है. उन के प्रशंसक उन्हें एक निडर नायक के किरदार में देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. एनटीआर जूनियर की फिल्मकार एस एस राजामोली के साथ 'आरआरआर' चौथी फिल्म है. इस में उन्होंने खतरनाक स्टंट के साथसाथ भारी वजन भी उठाया है. –शांतिस्वरूप त्रिपाठी ●

बचाए रेप के खतरों से प्रैजेंस औफ माइंड

लेख • रमाकांत 'कांत'

अपर्णा को एयरपोर्ट जाना था. वह सुबह 6 बजे जल्दी घर से निकली थी, फिर भी उसे आसपास औटो कहीं नहीं मिला. निराशहताश अपर्णा सड़क पर अकेली खड़ी बारबार घड़ी देख रही थी कि फ्लाइट मिस न हो जाए. उस ने उबर ट्राई किया पर उस को आने में 15 से 20 मिनट लगने वाले थे. तभी एक कार उस के पास आ कर रुकी. कार चालक उसी के अपार्टमैंट में रहने वाला युवक था. उस ने अपर्णा से पूछा कि वह कहां जा रही है.

एक पल के लिए तो वह झिझकी लेकिन उसे वाकई उस समय सहायता की जरूरत थी, इसलिए उस ने उस लड़के को बताया कि साक्षात्कार के लिए वह एयरपोर्ट जा रही है किंतु उसे बहुत देर हो चुकी है. कार का अगला दरवाजा खोलते हुए युवक बोला, 'मुझे वसंत विहार जाना है. आ जाओ, किसी टैक्सी स्टैंड पर छोड़ दूंगा.'

झिझक के साथ अपर्णा कार में बैठ गई. अभी पंजाबी बाग भी नहीं पहुंचे थे कि युवक ने दिलफेंक व्यक्ति की तरह बातें करनी शुरू कर दीं. अपर्णा यह सोच कर बरदाश्त करती रही कि उसे किसी तरह एयरपोर्ट समय पर पहुंचना है. मगर धौला कुंआ के बाद कार रिज के घने जंगलों की ओर घूम गई. तब वह चौंकी. उस ने युवक से पूछा, 'हम इधर से कहां जा रहे हैं?' उस के इस प्रश्न पर युवक ने उसे धमकाते हुए चुप रहने को कहा.

अनहोनी की आशंका से घिरी अपर्णा अब साक्षात्कार की बात भूल कर बचाव के उपाय सोचने लगी. उसे तब राहत महसूस हुई जब एक कार लालबत्ती पर रुकी. कुछ और गाड़ियां भी आ कर रुकीं. युवक बेचैन था. वह जल्दी से सुनसान स्थान पर पहुंच जाना चाहता था. अपर्णा ने मौका देखा और कार की

चाबियों का गुच्छा निकाल कर सड़क पर फेंक दिया. तब तक हरी बत्ती हो गई. पीछे वाले वाहन हौर्न बजाए जा रहे थे. इतने में अपर्णा ने कार का दरवाजा खोला और उतर गई.

कार को रुका देख कुछ लोग जमा हो गए. अपर्णा ने उन को अपनी आपबीती बताई और बताया कि यह युवक गलत नीयत से उसे ले जा रहा है. चौराहे पर पुलिस वैन भी खड़ी थी. उन्होंने युवक को दबोच लिया. बस 'प्रैजेंस औफ माइंड' के कारण अपर्णा बच गई. हां, उस की फ्लाइट इस सारे चक्कर में मिस हो गई.

मधूलिका रोज सुबह टहलने जाया करती थी. उस दिन भी वह टहल रही थी. राजस्थान विश्वविद्यालय के पीछे वाला निर्जन क्षेत्र था. बेखबर मधूलिका अपनी गति से चली आ रही थी कि पीछे से तेज गति से चले आ रहे 3 युवकों ने उसे घेर लिया और उस के साथ चलना शुरू किया. वे नए चेहरे थे. उसे तुरंत खतरे का एहसास हुआ.

वह सतर्क हो कर चलती हुई उपाय सोचती रही. जैसे ही विश्वविद्यालय के पीछे वाला दरवाजा आया, उस ने ट्रैक सूट की जेब से सीटी निकाली और जोर से बजाना शुरू कर दिया. सीटी की आवाज सुन कर युवक बौखला गए. वे समझ नहीं पाए कि क्या किया जाए? वे वहां से भागने लगे तो वहां वौक कर रहे लोगों ने उन को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया. पुलिस की पूछताछ से पता चला कि वे मधुलिका का अपहरण व बलात्कार के लिए आए थे पर उस की सीटी ने उसे बचा लिया.

महिलाओं के साथ कभी न कभी ऐसी दुखद परिस्थिति बन सकती है जब उन्हें विशेष सतर्कता की जरूरत पड़ जाए. ऐसे में जरूरी है कि उन का 'प्रैजेंस औफ माइंड' बढ़िया हो और वे खुद को प्रोटैक्ट करने में सक्षम हों.

सच, बलात्कार के मामले में सतर्कता ही बचाव है. बलात्कार हो जाने के बाद चाहे अपराधी को कितना ही कठोर दंड मिल जाए पर जो हादसा घटित हो गया उस की भरपाई नहीं हो सकती. आंकड़े इस बात के गवाह हैं कि अधिकांश बलात्कार के मामले या तो दर्ज ही नहीं होते और यदि हो भी जाते हैं तो अपराधियों को सजा नहीं मिल पाती. इस साल एनसीआरबी की सामने आई रिपोर्ट बताती है कि पूरे देश में 2020 में बलात्कार के रोज औसतन 77 मामले दर्ज किए गए और कुल 28,046 मामले सामने आए. इन पीड़िताओं में 25,498 वयस्क और 2,655 पीड़ित 18 साल से कम उम्र की थीं. ऐसे ही 2019 में दुष्कर्म के कुल 32,033 मामले, 2018 में 33,356 मामले और 2017 में 32,559 मामले दर्ज हुए थे. सो, उचित यही है कि ऐसे उपाय अपनाए जाएं ताकि बलात्कार की घटनाएं ही घटित न हों.

उपाय जिन से बचाव संभव है

पहली जरूरत यह है कि उन स्थितियों से बचा जाए जिन में अकसर बलात्कार होते हैं. उदाहरण के लिए संदिग्ध व अनजान व्यक्ति से एकांत में मिलने से बचें.

आमतौर पर अधिकतर बलात्कार परिचय के दायरे अथवा निकट व रक्त संबंधियों में घटित होते हैं. सो ऐसे संदिग्ध चरित्र वालों से, चाहे वे कितने ही निकट संबंधी या बड़ी आयु के हों, बच कर रहना जरूरी है.

किसी महिला के प्रति यदि कोई व्यक्ति अधिक सहानुभूति दिखाता है तो उस के प्रति पर्याप्त सजग व सतर्क रहने की जरूरत है. ऐसे लोगों से सुनसान स्थानों पर मिलने से बचें. निश्चित दिनचर्या के तहत एक ही समय व स्थान से गुजरना भी घातक साबित हो सकता है, इसलिए समयसमय पर रास्ता बदलती रहें.

जब कभी संकट की घड़ी आ जाए तो घबराने व दया की भीख मांगने की जरूरत नहीं क्योंकि किसी बलात्कारी से दया की अपेक्षा करना व्यर्थ है. हां, यदि ऐसे संकट की घड़ी में बुद्धि का समुचित प्रयोग किया जाए तो संभव है कि कोई बचाव का रास्ता निकल आए.

खतरे को भांप कर अपराधी की हरकतों पर सतर्कतापूर्ण निगाह रखी जाए क्योंकि असामान्य कार्य के समय मनुष्य कभी भी सामान्य नहीं रहता. उस समय वह गलतियां करता ही है. अपराध मनोविज्ञान का यही मुख्य सिद्धांत है. यदि महिला जागरूक है तो वह ऐसी चूक का भरपूर फायदा उठा सकती है और बचाव करने में कामयाब रहती है.

अधिकांश अपराधी महिलाओं को सौफ्ट टारगेट मानते हैं. उसी मानसिकता के बलबूते पर वे ऐसे कुकर्म करने को उतारू होते हैं. यदि महिलाएं जूडोकराटे जैसी युद्धक कला सीख लें तो विपत्ति में वे अपनी सहायता कर सकती हैं. ऐसी महिला के मुकाबले में उतरते ही अपराधी का मनोबल टूट जाता है.

वहीं, कुछ उपकरण भी होते हैं जिन के जरिए बचाव किया जा सकता है. ये इतने खूबसूरत बने होते हैं कि देख कर लगता ही नहीं कि बचावी उपकरण में खास किस्म का दुर्गंध वाला रसायन भरा है, जो कपड़ों पर गिर जाए तो काफी समय तक आक्रमणकारी के मूड को बिगाड़ देता है. कुछ लौकेटों में ऐसे रसायन भरे होते हैं जिन के कारण आक्रमणकारी का खांसतेखांसते बुरा हाल हो जाता है.

पर्सनल अलार्म छोटा किंतु शक्तिशाली होता है. इस की ध्वनि सामान्य अलार्म से अलग होती है तथा औन करते ही करीब चौथाई किलोमीटर के दायरे में सुनाई पड़ने लगती है. यदि निर्जन स्थान न हो तो अलार्म की आवाज से बहुत सारे लोग जमा हो सकते हैं. कामकाजी महिलाओं को तो खासकर चाहिए कि वे ऐसा अलार्म या सीटी अपने पास अवश्य रखें.

संकट की घड़ी में घबराहट से बचते हुए प्रैजेंस औफ माइंड अवश्य बनाए रखा जाए. बचाव का हथियार वही कारगर है जो मौके पर सूझे और काम में आए. यह सब तभी संभव है जब दिमागी संतुलन हो और उस का समुचित इस्तेमाल किया जाए. नहीं तो पास में साधन होते हुए भी उन का उपयोग किया जाना संभव नहीं हो पाता. हां, दिमागी संतुलन के साथ हाथपैर चलाने का उपयुक्त प्रशिक्षण होना निहायत जरूरी है. ●

कहते हैं जिस के पास जज्बा है खुद को साबित करने का, उसे कोई हरा नहीं सकता. सफलता भी हिम्मतवीरों का साथ देती है. बचपन में जिन्हें बौडी शेमिंग के चलते शर्मिंदा होना पड़ा, आज वही हरनाज कौर संधू विश्वसुंदरी बन गई हैं. उन्होंने पूरे देश का नाम रोशन किया है

मिस यूनिवर्स हरनाज कौर संधू

भारत ने सौंदर्य के पैमाने पर देशदुनिया को चौंका दिया है. तभी तो रीता फारिया से ले कर सुष्मिता, ऐश्वर्या, प्रियंका, युक्ता, लारा और हरनाज तक देश की 6 लड़कियां मिस वर्ल्ड और 3 मिस यूनिवर्स चुनी जा चुकी हैं. सौंदर्य प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा में कौन, कितना और किस स्तर पर सुंदर है, इसे ले कर बनाए गए पैमाने में भारतीय सुंदरता एक बार फिर अगली पंक्ति में आ चुकी है.

हरनाज कौर संधू मिस यूनिवर्स का खिताब जीतने वाली तीसरी भारतीय हैं. इन से ठीक 21 साल पहले जब वर्ष 2000 में लारा दत्ता, सुष्मिता सेन के बाद मिस यूनिवर्स चुनी गई थीं, तब उसी साल हरनाज कौर संधू का जन्म हुआ था.

बचपन से ले कर किशोरावस्था तक आतेआते उन्हें अपनी सुंदरता का एहसास होने लगा था. स्कूल से कालेज के दिनों तक वे सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपड़ा, लारा दत्ता, युक्ता मुखी से ले कर मानुषी तक की सुंदरियों की कायल बन चुकी थीं. वे उन के ग्लैमर और सैलिब्रिटीपन से काफी हद तक प्रभावित हो गई थीं. यही विशेष कारण रहा कि वे मौडलिंग और सिनेमा के परदे तक खिंचती चली गईं.

मिस यूनिवर्स और मिस वर्ल्ड की ख्यातिप्राप्त सुंदरियों ने उन्हें काफी प्रभावित

किया था. वे न केवल सुंदरता, बल्कि अपनी बात को दमदार तरह से वैश्विक मंच के लोगों तक पहुंचाने को उत्सुक हो गई थीं. लेकिन संधू का दुबलापन उन्हें इस से दूर रखे हुए था. एक दिन वही छरहरी काया उन की मजबूती बन गई. उसी का असर है कि अब तक दुनिया की 2 सब से बड़ी सौंदर्य प्रतियोगिताओं में भारत की कुल 9 सुंदरियों में उन का नाम भी शामिल हो गया.

इस साल 70वीं मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता 2021 का आयोजन 12 दिसंबर को इसराईल के दक्षिणी शहर इलात में आयोजित हुआ था. इसे ले कर सब से खास बात यह थी कि इस मुकाबले में पूरी दुनिया से चुन कर आईं खूबसूरत लड़कियों को टक्कर देने के लिए भारत की हरनाज कौर संधू शामिल हुई थीं.

हाल ही में संधू ने 'लिवा मिस दिवा यूनिवर्स 2021' का खिताब अपने नाम किया था. अब वे इस महत्त्वाकांक्षा के साथ मंच पर खड़ी थीं कि उन्हें दुनियाभर में अपनी खूबसूरती का लोहा मनवाना है, जिस की तैयारी उन्होंने पूरी शिद्दत के साथ की थी.

भारतीय समय के अनुसार 13 दिसंबर, 2021 की सुबह का वक्त था. भारत की मिस इंडिया हरनाज कौर संधू भी एक मजबूत दावेदारी वाली प्रतियोगी के तौर पर शामिल थीं. इस से पहले के कई राउंड पार कर वे यहां तक पहुंची थीं. 3 घंटे तक चली इस लाइव प्रतियोगिता में विशेष राउंड भी होना था, जो प्रतियोगिता के नियम के मुताबिक आखिरी और फाइनल होता है.

इधर भारत में मीडियाकर्मियों समेत समस्त देशवासियों को उस के नतीजे का बेसब्री से इंतजार था. चंडीगढ़ में सुबह साढ़े 5 बजे से ही संधू परिवार टैलीविजन से चिपका हुआ था. हरनाज की मां रविंदर कौर दुआ मांगने गुरुद्वारे भी चली गई थीं. हालांकि, बेटी का हौसला बढ़ाने के लिए वे इसराईल जाना चाहती थीं.

प्रतियोगिता को लाइव नहीं देख पाने के बारे में रविंदर से जब लोगों ने पूछा कि वे वहां क्यों नहीं गईं, तब उन्होंने हंसते हुए कहा, ''हम यहां से भी उस को अपना सपोर्ट और आशीर्वाद दे सकते हैं. आज तक मैं किसी पीजैंट में नहीं गई तो मुझे इस का डर भी था.'' थोड़ा मजाकिया लहजे में वे आगे बोलीं, ''मैं ने अभी तक जिन्हें भी वोटिंग की है वे हारे ही हैं.''

पंजाब की रहने वाली 21 वर्षीया हरनाज संधू ने पराग्वे की नादिया फरेरा और दक्षिण अफ्रीका की ललेला मसवाने को पछाड़ कर इस खिताब पर कब्जा जमाया. खिताब जीतने के बाद हरनाज संधू ने कहा, ''मैं, मेरे परिजन और मिस इंडिया संगठन की आभारी हूं जिन्होंने इस पूरे सफर में मेरा मार्गदर्शन किया और मेरा समर्थन किया.''

इसी के साथ उन की भावना से भरी प्रतिक्रिया थी, ''उन सब के लिए बहुत सारा प्यार जिन्होंने मुझे ताज दिलाने के लिए प्रार्थनाएं कीं. 21 सालों के बाद भारत के लिए यह गौरवशाली ताज ले जाना सब से बड़े गर्व का क्षण है.''

उल्लेखनीय है कि सौंदर्य प्रतियोगिताओं में हरनाज 17 साल की उम्र से ही भाग लेती रही हैं. इस से पहले 2021 में उन्हें 'मिस दीवा 2021' का खिताब भी मिल चुका है. उन्होंने 2019 में फेमिना मिस इंडिया पंजाब का खिताब जीता था, फिर उसी साल फेमिना मिस इंडिया प्रतियोगिता के शीर्ष 12 में उन्होंने जगह बना ली थी.

आखिरकार प्रतियोगिता के उस राउंड की भी बारी आ गई, जब हरनाज से ज्यूरी द्वारा 2 सवाल पूछे गए थे. उन के जवाब दे कर संधू ने न केवल पूरी दुनिया को चौंका दिया, बल्कि उस के बाद ही उन्हें मिस यूनिवर्स के ताज से नवाजा गया. उन की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए. उन के इसी नए व्यक्तित्व पर आज देश को नाज है.

टौप थ्री यानी अंतिम राउंड के दौरान सभी प्रतिभागियों से पूछा गया था कि आज के समय में दबाव का सामना कर रही उन युवा महिलाओं को वे क्या सलाह देना चाहेंगी, जिस से वे उस का सामना कर सकें?

इस सवाल पर हरनाज संधू ने कहा, ''आज के युवाओं पर सब से बड़ा दबाव उन का खुद पर भरोसा करना है. यह जानना कि आप अनोखे हो, यह आप को खूबसूरत बनाता है. अपनेआप की दूसरों से तुलना करना बंद करिए और पूरी दुनिया में जो हो रहा है उस पर बात करना बेहद जरूरी है. बाहर निकलिए, खुद के लिए बोलिए क्योंकि आप ही अपने जीवन के नेता हैं. आप खुद की आवाज हैं. मैं खुद में विश्वास करती हूं और इसीलिए मैं आज यहां पर खड़ी हूं.'' इस जवाब ने हरनाज को टौप थ्री में शीर्ष पर बना दिया और वे विजयी घोषित की गईं.

कालेज की फ्रेशर पार्टी के बाद बढ़ी दिलचस्पी

इस से पहले टौप 5 के राउंड में उन से जलवायु परिवर्तन से जुड़ा सवाल पूछा गया था. पूछा गया सवाल था, ''अधिकतर लोग सोचते हैं कि जलवायु परिवर्तन एक छलावा है, आप उन्हें समझाने के लिए क्या करेंगी?''

इस का जवाब हरनाज ने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ दिया था, ''मेरा दिल टूट जाता है जब मैं प्रकृति को देखती हूं कि वह कितनी दिक्कतों से गुजर रही है और यह सब हमारे गैरजिम्मेदाराना व्यवहार के कारण है. मैं पूरी तरह मानती हूं कि यह समय कम बात करने का और अधिक काम करने का है, क्योंकि हमारा हरेक काम प्रकृति को या तो बचा सकता है या नष्ट कर सकता है. रोकथाम और सुरक्षा करना, पछताने और मरम्मत करने से बेहतर है और दोस्तो, मैं आज इसी के लिए आप को राजी करने की कोशिश कर रही हूं.''

हरनाज संधू की मां रविंदर कौर डाक्टर हैं. उन का पैतृक गांव कोहाली जिला गुरदासपुर में है. उन्हें आज यह याद करते हुए आश्चर्य होता था कि एक समय में उन की बेटी को कभी मोटी तो कभी दुबलीपतली कह कर चिढ़ाया जाता था. आज वह मिस यूनिवर्स है. हालांकि वे यह भी कहती हैं कि बौडी शेमिंग को पीछे छोड़ कर उस ने यहां तक पहुंचने में काफी मेहनत की और आत्मविश्वास को जरा भी डगमगाने नहीं दिया.

रविंदर कौर हरनाज के पहली बार 2017 में इस क्षेत्र में कदम रखने के बारे में बताती हैं कि कैसे उसे पिता प्रीतम सिंह संधू ने इस की इजाजत दी थी. यहां तक कि उस के बाद बच्चों ने घर में जम कर भांगड़ा किया था. सौंदर्य प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए हरनाज ने सब से पहले अपने भाई को बताया था, फिर मां से गुहार लगाई थी. जाट परिवार होने के कारण उसे डर था कि कहीं इस के लिए पिता मना न कर दें, इसलिए उस ने अपने पिता को बाद में बताया.

इस पर पिता प्रीतम सिंह ने बताया, ''तब मुझे भी लगा कि बच्चों पर भरोसा कर के आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए. मेरी हां पर उन्होंने घर में दिनभर भांगड़ा किया था. उन्होंने आगे बताया, ''सौंदर्य प्रतियोगिताओं में जाने की शुरुआत 2017 में तब हुई थी जब हरनाज सैक्टर 42 के सरकारी कालेज पहुंची थी. वहां उस की फ्रैशर पार्टी थी और उस में वह सैकंड रनरअप चुन ली गई थी. उस के बाद हरनाज ने कई प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और फिर आगे बढ़ती चली गई.''

हालांकि, हरनाज अभी भी चंडीगढ़ के गवर्नमेंट कालेज में एमए की स्टूडैंट हैं. वे पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की पढ़ाई कर रही हैं. हरनाज के मातापिता ने मीडिया से उन के बचपन के बारे में भी कई बातें साझा की हैं. उन की मां के अनुसार, हरनाज छोटी उम्र से ही अच्छे व्यवहार वाली और मृदुभाषी थी. उसे इस के लिए स्कूल से सर्टिफिकेट भी मिले थे. हरनाज ने भले ही कई सौंदर्य प्रतियोगिताएं जीती हैं, लेकिन उन्हें भी अपने शरीर के कारण बौडी शेमिंग का सामना करना पड़ा था. इस बात को हरनाज अपने कुछ इंटरव्यू में भी बता चुकी हैं कि कैसे बहुत पतले होने के कारण उन्हें लोग टोकते रहते थे और टिप्पणी

अब तक चुनी गईं देश से 9 सुंदरियां

हरनाज कौर संधू के अलावा भारत में 9 सुंदरियों के नाम इतिहास में दर्ज हैं. उन में 3 के नाम मिस यूनिवर्स के खिताब हैं तो 6 सुंदरियां बीते 55 साल के दरम्यान मिस वर्ल्ड का ताज पहन चुकी हैं. एक नजर इन सुंदरियों पर डालते हैं–

▼ रीता फारिया (1966) : भारत की पहली मिस वर्ल्ड का खिताब रीता फारिया के नाम है, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सौंदर्य प्रतियोगिता में भारत की सफलता का पहला परचम 1966 में लहराया था. जब रीता फारिया मिस वर्ल्ड बनीं, तब वे इस खिताब को जीतने वाली न केवल भारत, बल्कि एशिया की भी पहली प्रतियोगी थीं. उन दिनों प्रतियोगिता का फाइनल समारोह लंदन में हुआ था. हालांकि, उन्होंने सौंदर्य और ग्लैमर को अपना कैरियर नहीं बनाया.

कुछ समय पहले पहली भारतीय मिस वर्ल्ड रीता फारिया को यूनाइटेड किंगडम में गोवन कम्युनिटी द्वारा सम्मानित किया गया था. साल 1971 में रीता फारिया ने एंडोक्राइनोलौजिस्ट डेविड पावेल से शादी कर ली और साल 1973 में दोनों डबलिन चले गए थे. उन के 2 बेटे और 5 पोतेपोतियां हैं.

▼ सुष्मिता सेन (1994) : भारत की पहली मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन को वर्ष 1994 में यह खिताब तब मिला था जब वे मात्र 18 साल की थीं. उन की बदौलत ही भारत ने मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में पहली बार कामयाबी का झंडा गाड़ा था. उन दिनों यह प्रतियोगिता फिलीपींस की राजधानी मनीला में हुई थी.

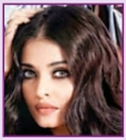

▼ ऐश्वर्या राय (1994) : एक ही साल में भारत की 2 सुंदरियों को उन की सुंदरता के लिए ताज पहनाया गया था, उन में एक ऐश्वर्या राय भी थीं. वे 1994 में ही भारत की दूसरी मिस वर्ल्ड बनीं थीं. भारत के लिए यह दोहरी सफलता थी. मिस यूनिवर्स के बाद ऐश्वर्या राय मिस वर्ल्ड बनीं थीं. यह प्रतियोगिता दक्षिण अफ्रीका के शहर सनसिटी में हुई थी. ऐश्वर्या राय ने फिल्म और मौडलिंग को कैरियर बनाया.

▼ डायना हेडेन (1997) : भारत की तीसरी मिस वर्ल्ड डायना हेडेन के सिर पर यह ताज 1997 में सेशेल्स के विक्टोरिया शहर में पहनाया गया था. डायना का जन्म हैदराबाद में हुआ था. हैदराबाद पब्लिक स्कूल से ही डायना ने ऐक्टिंग और ड्रामा की पढ़ाई की थी. इस के आगे की पढ़ाई के लिए वे लंदन चली गई थीं.

▼ युक्ता मुखी (1999) : भारत की चौथी मिस वर्ल्ड को यह खिताब लंदन में हुई मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में मिला था. युक्ता का जन्म 1979 में बेंगलुरु के एक सिंधी परिवार में हुआ था, लेकिन उन की परवरिश दुबई में हुई थी. फैशन की दुनिया में अपना सिक्का जमाने के बाद युक्ता मुखी ने फिल्म इंडस्ट्री का रुख कर लिया था.

▼ प्रियंका चोपड़ा (2000) : भारत की 5वीं मिस वर्ल्ड प्रियंका चोपड़ा को यह खिताब लंदन में हुई मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में मिला था. प्रियंका ने बौलीवुड से ले कर हौलीवुड तक में अपने अभिनय का डंका बजाया है. उन की एक विशेष पहचान देसी गर्ल की बनी हुई है, जो छोटे शहर से आ कर इस मुकाम को हासिल कर पाई हैं.

प्रियंका चोपड़ा का जन्म 18 जुलाई, 1982 को जमशेदपुर, बिहार (वर्तमान में झारखंड) में अशोक चोपड़ा और मधु चोपड़ा के घर में हुआ था. उन के मातापिता आर्मी में डाक्टर के पद पर कार्य कर चुके हैं. उन की कजिन बहनें परणीति चोपड़ा, मीरा चोपड़ा और मन्नारा चोपड़ा भी बौलीवुड में सक्रिय हैं.

भारत में सब से ज्यादा भुगतान पाने वाली और सब से लोकप्रिय हस्तियों में से एक प्रियंका चोपड़ा को कई पुरस्कार मिले हैं, जिन में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 5 फिल्मफेयर पुरस्कार शामिल हैं. 2016 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री, चौथे उच्चतम नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया है और टाइम पत्रिका भी प्रियंका चोपड़ा को दुनिया में 100 सब से प्रभावशाली हस्तियों में शामिल कर चुकी है.

▼ लारा दत्ता (2001) : भारत को फिर एक बार मिस यूनिवर्स लारा दत्ता के रूप में मिल गई. वह देश की दूसरी मिस यूनिवर्स थीं. लारा दत्ता साइप्रस में हुई प्रतियोगिता में मिस यूनिवर्स बनी थीं. यह 21वीं सदी की

भी करते रहते थे. ऐसा होने पर परिवार ने हमेशा उन की हिम्मत बढ़ाई.

बचपन में बहुत मोटी थीं हरनाज

रविंदर के अनुसार, ''हरनाज बचपन में मोटी थी. हम उसे कद्दू कह कर बुलाते थे, लेकिन बाद में वह पतली हो गई. लोग उसे बोलते थे लेकिन मैं ने उसे कहा कि इच्छाशक्ति मजबूत होनी चाहिए और किसी की फिक्र मत करो. यह तुम्हारा शरीर है और तुम्हें खुद से प्यार करना चाहिए.

''बौडी शेमिंग हुई थी, वह कभी परेशान भी हो जाती थी, लेकिन मैं उसे प्रोत्साहित करती थी.'' उन्होंने यह भी बताया कि उन के हरनाज के साथ का रिश्ता मांबेटी से ज्यादा दोस्ती का रहा है. वे खुद अपनी सीक्रेट्स उसे बताती रहती हैं. हरनाज को अपने मातापिता के साथ परिवार के दूसरे लोगों से भी सहयोग मिला. उन की मां का कहना है कि हरनाज के ताया और ताई ने भी उसे बहुत सपोर्ट किया है.

MISS
MISS DIVA 2021 1st RUNN
UNIVERSE 2021

हरनाज की ताई लकविंदर कौर ने इस पर अपनी खुशी जताते हुए मीडिया को बताया कि हरनाज उन के पास आ कर हमेशा किसी काम के लिए कहती थी, 'ताई, मैं आप की मदद करूंगी. बताओ कैसे करनी है.'

कुछ ऐसी ही प्रतिक्रिया उन के ताऊ ने भी दी है, ''हरनाज अपने पूरे परिवार में अकेली बेटी है जिस से मिली कुछ खुशियां ऐसी होती हैं जिन्हें बयां नहीं किया जा सकता. सुबह जब उस के ताज के बारे में सुना, तब हमारी आंखों में खुशी के आंसू थे. हमारी बेटी ने वह कर दिखाया जो हम ने कभी सोचा भी न था. हरनाज आज जहां है, वहां वह अपनी मेहनत से पहुंची है.''

संधू को घुड़सवारी, तैराकी और घूमने का बहुत शौक है. एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा कि अपने खाली वक्त में वे इन्हीं शौकों को पूरा करती हैं. चंडीगढ़ की मौडल हरनाज संधू ने अपने कैरियर में अब तक कई खिताब जीते हैं. इन में साल 2017 में टाइम्स फ्रैश फेस मिस चंडीगढ़, साल 2018 में मिस मैक्स इमर्जिंग स्टार, साल 2019 में फेमिना मिस इंडिया पंजाब और साल 2021 में मिस यूनिवर्स इंडिया के खिताब शामिल हैं.

साल 2018 में हरनाज ने मिस इंडिया पंजाब का खिताब हासिल करने के बाद द लैंडर्स म्यूजिक वीडियो तेराताली में भी काम किया. इस के बाद उसी साल उन्हें सितंबर में 'मिस दीवा यूनिवर्स इंडिया 2021' का खिताब मिला था. तब उन्हें यह ताज बौलीवुड हीरोइन कृति सेनन ने पहनाया था.

मिस यूनिवर्स 2021 का हिस्सा बनने से पहले ही हरनाज फिल्मों में अपनी जगह हासिल कर कर चुकी हैं. अगले साल उन की 2 फिल्में रिलीज होने वाली है. दोनों पंजाबी फिल्में 'बाईजी कुट्टांगे' और 'यारा दियां पू बारां' हैं.

संधू सोशल साइट पर भी काफी सक्रिय रहती हैं. उन्हें अपनी फिटनैस से बेहद प्यार है. साथ ही, प्रकृति से भी बेहद लगाव रखती हैं. ग्लोबल वार्मिंग और प्रकृति संरक्षण को ले कर अपने विचार और वक्तव्य से वे मिस दीवा पैजेंट में भी जज पैनल को प्रभावित कर चुकी हैं. उन का मानना है कि पृथ्वी को बचाने के लिए हमारे पास अभी भी समय है, इसलिए जितना हो सके, प्रकृति का संरक्षण किया जाए.

मिस यूनिवर्स 2021 के दौरान हरनाज ने स्विमसूट से ले कर नैशनल कौस्ट्यूम सैशन तक में अपनी खूबसूरती से लोगों को प्रभावित किया. उन्होंने नैशनल कौस्ट्यूम सैशन में पिंक कलर का लहंगा पहना था, इस के साथ ही वे हाथों में मैचिंग छतरी के साथ नजर आई थीं. उन के इस लुक में लोगों ने पारंपरिक भारतीय महारानी के शाही अंदाज का अनुभव किया था.

मिस यूनिवर्स 2021 की इस प्रतियोगिता के पहले दौर में 75 से अधिक प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया था. साथ ही, इस रेस में मिस स्वीडन, मिस थाईलैंड, मिस यूक्रेन, मिस यूएसए, मिस वेनेजुएला, मिस कैमरून, मिस ब्राजील, मिस ब्रिटिश वर्जिन आईलैंड समेत कई ब्यूटी क्वीन शामिल हुईं.

इस के जजेज का पैनल भी कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं था, जिस में बौलीवुड अभिनेत्री उर्वशी रौतेला भी शामिल थीं. इस प्रतियोगिता को व्यापारिक नजरिए से भी देखा जा रहा है. भारत समेत समूचे एशियाई देशों पर प्रतियोगिता के आयोजकों की नजरें टिकी रहती हैं. उन में मार्केटिंग और कूटनीतिक नजरिया भी शामिल है. सभी को मालूम है कि मिस यूनिवर्स के मंच से कही गई हर बात को पूरी दुनिया अहमियत देगी. इस के लिए भारत को आगे कर के ही संभावित निर्णय को प्रमुखता प्रदान की जा सकती है. – प्रतिनिधि ●

पहली मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता थी.

लारा दत्ता की गिनती बौलीवुड की सफल अभिनेत्रियों में होती है. हालांकि वे फिल्म जगत से गायब रह कर भी चर्चा में बनी रहती हैं. उन की चर्चा सुंदरता के साथसाथ लव अफेयर को ले कर भी हुई. कभी केली दोरजी के साथ उन के अफेयर की चर्चाओं को हवा मिली तो कभी डिनो मोरिया के साथ.

साल 2009 में टैनिस स्टार महेश भूपति के प्यार के किस्से सामने आने के बाद साल 2011 के फरवरी महीने में उन्होंने महेश के साथ शादी रचा ली. लारा को स्टाइलिश और फिटनैस लेडी के रूप में जाना जाता है. कारण, वे एरोबिक्स, स्विमिंग और व्यायाम से खुद को फिट रखती हैं.

▼ **मानुषी छिल्लर (2017)** : भारत की छठी मिस वर्ल्ड मानुषी दिल्ली एनसीआर की रहने वाली हैं. उन्हें इस का ताज चीन के हेनान प्रांत के सान्या शहर में हुई मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में पहनाया गया था. उन की पहचान या कैरियर फिल्में या मौडलिंग में नहीं बन पाई है लेकिन उन्होंने हैदराबाद में आयोजित 2017 ग्लोबल उद्यमिता शिखर सम्मेलन में बतौर वक्ता अपना संभाषण दे कर सब को चौंका दिया था.

मानुषी को एनीमिया फ्री हरियाणा कैंपेन का ब्रैंड एंबेसडर बनाया गया. बताते हैं उस के बाद ही हरियाणा सरकार द्वारा उन के 'ब्यूटी विद ए परपज' परियोजना 'शक्ति' को 18 करोड़ रुपए का सरकारी अनुदान भी प्राप्त हुआ.

Small Screen

भारती सिंह का बेबी बंप

टीवी कौमेडी में सिक्का जमा चुकी भारती सिंह की शादी 2017 में हर्ष लिमबाचिया से हुई. दोनों की मैरिड लाइफ एकदूसरे के साथ बेहद हंसीखुशी चल रही है. कौमेडियन भारती ने कुछ समय पहले ही अपनी प्रैग्नैंसी की खबर साझा की थी. वे 5 महीने की प्रैग्नैंट हैं.

भारती सिंह ने इंस्टाग्राम पर अपनी और हर्ष की एक फोटो शेयर की है. इस फोटो में भारती अपना बेबी बंप दिखा रही हैं. वहीं, हर्ष उन के पेट पर हाथ रखे हुए हैं. दोनों ने अपने बंप पर दिल बना कर रखा हुआ है. तसवीर में दोनों की क्यूटनैस देखने वाली है. भारती ने इस दौरान रैड कलर की ड्रैस पहनी हुई है. इस के साथ ही एक जैकेट पहनी है. वहीं, हर्ष ने रैड टीशर्ट के साथ व्हाइट जैकेट पहनी है.

इस के कैप्शन में अपने कौमेडी अंदाज में भारती ने मजेदार तरीके से लिखा, ''संता आएगा या संती, क्या लगता है आप को?'' इस पर कई टीवी सेलैब्स ने कमैंट किए.

भारती अपनी प्रैग्नैंसी को ले कर बेहद एक्साइटेड हैं. वे 2–3 सालों से फैमिली स्टार्ट करने की कोशिश कर रही थीं. दरअसल, बीते दिनों भारती कई इंटरव्यू में हर्ष के साथ फैमिली शुरू करने की इच्छा जाहिर कर चुकी हैं.

भारती ने हाल ही में बौम्बे टाइम्स से बात करते हुए खुलासा किया था कि वे अपनी प्रैग्नैंसी तारीख के आखिरी दिन तक काम करना चाहती हैं. भारती पति हर्ष के साथ वर्तमान में एक आगामी प्रतिभा रिऐलिटी शो 'हुनरबाज' की मेजबानी कर रही हैं.

मिताली को नए साल का इंतजार

हर किसी के लिए नया साल नई उम्मीदों से भरा होता है. नए साल में पुराने गमों को भुला कर नई शुरुआत करने का मौका भी होता है, खासकर ऐसे समय में जब पूरा विश्व महामारी से जूझ रहा है. कोविड महामारी के बाद के 2 साल सभी के लिए कई उठापटकों से बीते हैं. लोगों के जीवन को इस महामारी ने भीतर से प्रभावित किया, लेकिन समय के साथ चीजें सुधरी भी हैं, कइयों के लिए 2020 खराब बीता तो 2021 में चीजें थोड़ी ठीक रहीं.

हर किसी की तरह 'गुम है किसी के प्यार में' की अभिनेत्री मिताली नाग भी 2022 का इंतजार बेसब्री से कर रही हैं. उन का कहना है कि नए साल का विचार उन्हें नई आशा और जोश से भर देता है. 2022 में वे जिस सब से महत्त्वपूर्ण चीज का इंतजार कर रही हैं, वह है बच्चों का टीकाकरण. वे चाहती हैं कि उन के 4 साल के बेटे रुरांश का टीकाकरण हो जिस से उन्हें महामारी से लड़ने में मदद मिलेगी.

मिताली ने एक इंटरव्यू में कहा, ''मैं चाहती हूं कि उसे (रुरांश को) इस साल वैक्सीन मिल जाए ताकि वह कम से कम अपना शैक्षणिक जीवन सामान्य रूप से शुरू कर सके. अब उन की बारी है ताकि उन का जीवन पटरी पर आ सके.''

मिताली के लिए 2021, साल 2020 से बेहतर रहा और वे उम्मीद कर रही हैं कि 2022 इस से बेहतर हो. वे कहती हैं, ''बेशक पिछले 2 साल सभी के लिए कठिन रहे हैं. लेकिन व्यक्तिगत रूप से मुझे लगा कि कुल मिला कर 2021 मेरे लिए बेहतर था.''

वे आगे कहती हैं, ''मैं आगे एक अच्छे वर्ष की प्रतीक्षा कर रही हूं. 2021 ने एक तरह से 2022 की नींव रखी है. मेरा शो अच्छा चल रहा है और मैं इस से खुश हूं.''

आसिम अपने ट्वीट से घिरे

बिग बौस 13 से शोहरत हासिल कर चुके आसीम रियाज सोशल मीडिया पर लगातार चर्चा में रहते हैं, कभी फैंस के समर्थन को ले कर तो कभी ट्रोलिंग को ले कर. आसिम रियाज इस बार खूब ट्रोल हो रहे हैं.

दरअसल, आसिम ने शहनाज गिल के डांसिंग वीडियो पर इशारोंइशारों में कुछ ऐसा कह दिया, जिस के बाद शहनाज गिल और सिद्धार्थ शुक्ला के फैंस ने आसिम को ट्रोल किया ही, साथ ही, अब टीवी ऐक्टर और बिग बौस के एक्स कंटैस्टैंट करणवीर बोहरा ने भी आसिम पर निशाना साधा है, उन्हें खरीखोटी सुनाई है.

दरअसल, शहनाज गिल ने हाल ही में अपने मैनेजर की इंगेजमैंट सेरेमनी अटैंड की थी. फंक्शन से शहनाज के हसंतेमुसकराते और डांस करते हुए कुछ वीडियोज सामने आए थे. इसी दौरान आसिम रियाज ने एक ऐसा ट्वीट कर दिया, जिसे देख कर लोगों को लगता है कि आसिम का ट्वीट शहनाज के लिए था, क्योंकि उन्हें शहनाज का डांस करना पसंद नहीं आया.

आसिम रियाज ने अपने ट्वीट में लिखा, ''अभी कुछ डांसिंग क्लिप्स देखे. सच में लोग इतनी जल्दी अपनों को भूल कर आगे बढ़ जाते हैं. क्या बात, क्या बात.'' इस पर टीवी ऐक्टर करणवीर बोहरा ने आसिम को फटकार लगाई, करण ने ट्वीट किया, ''इसे फिर से रीट्वीट करने का मन करता है, क्योंकि कुछ लोग दूसरों को मुसकराते हुए नहीं देख सकते और खासकर जब वेह्य एक अंधेरी जगह से बाहर आने की कोशिश कर रहे होते हैं.''

इतना सबकुछ हो जाने के बाद आखिरकार आसिम ने ट्वीट करते हुए अपनी सफाई में कहा जरूर कि यह शहनाज के लिए नहीं था पर चिड़िया को जो चुगना था वह तो चुग कर चली गई.

–प्रतिनिधि ●

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, गणतंत्र दिवस की परेड देखने दिल्ली आये हो, जब से आये हो बस भर-भर के खाये हो। लगता है पेट नहीं गैस का गुब्बारा लाये हो।
INDIA
अरी भाग्यवान, अपनी चिन्ता को करो कम, खाओ पियो दबा कर और शांत करो अपना मन। काहे घबरावत हो जब स्टोमाफिट साथ लाये है हम।

SUNCARE
बिस्मथ एवं बेलाडोना मिश्रित एंटासिड लिक्विड
स्टोमाफिट
लिक्विड
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
FIT

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम

450ML, 200ML, 100ML

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

गर्भधारण, हुकवार्म, पेट में कीड़े,
मासिक धर्म, साधारण कमजोरी,
बीमारी या संक्रमण, बवासीर से एनीमिया,
बच्चों में कमजोरी व थकावट

SUNCARE
HAEMOCAL
Delicious Taste
Iron Tonic with Folic Acid
TANGY ORANGE FLAVOUR
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वादिष्ट

300ML, 450ML

परिवार के हर उम्र के—
सदस्य के लिए लाभकारी...

HAEMOCAL-Z (450ml) जिंक के साथ उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें

(REGISTERED) RNI 6502/60 DL(c)-14/1090/2021-23 WPP U(c) 149/18/2021-23
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20 Published on 20/12/2021, Pgs. 48

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

झुर्रियां काले घेरे छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

Online Shopping:
www.zeelabpharmacy.com